दमण से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

Asli Azadi Dainik @AsliAzadiDainik

asliazadidainikofficial

असली आज़ादी

■ वर्षः 21, अंकः 306 ■ दमण, बुधवार 26, अगस्त 2026 ■ पृष्ठः 8 ■ मूल्यः 2 रु ■ RNI NO-DDHIN/2005/16215 ■ संपादक- विजय जगदीशचंद्र भट्ट

प्रशासन द्वारा खानवेल में आयोजित रोजगार मेला में लगभग 700 युवाओं को मिला रोजगार

- 863 अभ्यर्थियों ने कराया था पंजीकरण

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, सिलवासा 25 अगस्त। संघ प्रदेश दादरा नगर हवेली और दमण-दीव प्रशासक प्रफुल पटेल के मार्गदर्शन में दादरा नगर हवेली जिला प्रशासन द्वारा 25 अगस्त 2026 को खानवेल पंचायत घर में एक दिवसीय रोजगार मेला का आयोजन सफलतापूर्वक किया गया। रोजगार मेले का उद्देश्य क्षेत्र के युवाओं को रोजगार के अधिक से अधिक अवसर प्रदान करना है। रोजगार मेले में 863 उम्मीदवारों ने पंजीकरण कराया था। जिसमें से विभिन्न औद्योगिक इकाइयों द्वारा लगभग 700 उम्मीदवारों का चयन विभिन्न पदों के लिए मौके पर ही कर दिया गया। चयनित उम्मीदवारों को मौके पर ही नियुक्ति पत्र भी प्रदान किया गया। चयनित उम्मीदवारों में पुरुष एवं महिलाएं शामिल हैं। बडी संख्या में महिलाओं का चयन महिला सशक्तिकरण और समावेशी विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह परिणाम कार्यबल में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी और क्षेत्र में समान रोजगार अवसर प्रदान करने के प्रयासों की सफलता को दर्शाता है। प्रशासक प्रफुल पटेल के दूरदर्शी नेतृत्व एवं युवाओं को स्थानीय स्तर पर रोजगार उपलब्ध कराने की प्रतिबद्धता के परिणामस्वरूप यह रोजगार मेला सफलतापूर्वक आयोजित किया जा सका। जिला प्रशासन इस आयोजन को सफल बनाने के लिए सभी भागीदारी उद्योगों, हॉस्पिटल, होटल, युवा प्रतिभागियों और चुने हुए जन प्रतिनिधियों का धन्यवाद व्यक्त किया। इस आयोजन के माध्यम से स्थानीय युवाओं को विभिन्न औद्योगिक इकाइयों में रोजगार के अवसर प्राप्त हुए तथा नियोजकों एवं अभ्यर्थियों के बीच प्रत्यक्ष संवाद स्थापित हुआ। प्रशासन भविष्य में भी ऐसे आयोजनों के माध्यम से क्षेत्र के युवाओं को बेहतर रोजगार के अवसर प्रदान करने हेतु प्रतिबद्ध है। इस अवसर पर दानह जिला कलेक्टर प्रियांक किशोर, उप जिला अधिकारी अमित कुमार, जिला पंचायत अध्यक्षा निशा भावर सहित अन्य जनप्रतिनिधियों एवं प्रशासनिक अधिकारियों तथा संबंधित विभागों के अधिकारियों ने उपस्थित रहकर युवाओं का उत्साहवर्धन किया।

दमण की बांसवाडा गारमेंट्स कंपनी को प्रदूषण फैलाना पडा भारी: प्रदूषण नियंत्रण समिति ने ठोका 1.47 करोड़ रू.का जुर्माना

■ दो महीने पहले भी कंपनी को नोटिस भेजकर दी थी चेतावनी, फिर भी नहीं किया सुधार ■ बिजली कनेक्शन काटा और कंपनी को भी किया गया सील ■ जल अधिनियम 1974 और वायु अधिनियम 1981 के तहत गैर-अनुपालन के चलते कंपनी को बंद करने का जारी किया गया निर्देश ■ प्रदूषण नियंत्रण समिति द्वारा बांसवाडा गारमेंट्स पर की गई कार्रवाईः दूसरी कंपनियों के लिए चेतावनी

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण 25 अगस्त। दमण की बांसवाडा गारमेंट्स को भारी मात्रा में वायु प्रदूषण फैलाना उस समय भारी पड गया जब संघ प्रदेश दादरा नगर हवेली और दमण-दीव के प्रदूषण नियंत्रण समिति ने कार्रवाई करते हुए भारी भरकम जुर्माना लगाया है। प्रदूषण नियंत्रण समिति ने पर्यावरणीय नियमों के उल्लंघन के मामले में बांसवाडा सिंटेक्स लिमिटेड की कडैया स्थित इकाई के खिलाफ कार्रवाई की है। दमण के कडैया में चल रही बांसवाडा गारमेंट्स की इस इकाई को जल अधिनियम 1974 और वायु अधिनियम 1981 के तहत गैर-अनुपालन के चलते 18 अगस्त 2026 को बंद करने का निर्देश जारी किया गया है। प्रदूषण नियंत्रण समिति ने 2 महीने पहले भी नोटिस भेजकर कंपनी को वायु प्रदूषण नियंत्रण के नियमों का सख्ती से अनुपालन करने की हिदायत दी थी, लेकिन बांसवाडा गारमेंट्स ने प्रदूषण नियंत्रण समिति के आदेश को अनदेखा कर दिया और सुधार नहीं किया। इसके बाद प्रदूषण नियंत्रण समिति ने ठोस कदम उठाते हुए बांसवाडा गारमेंट्स के खिलाफ जल अधिनियम 1974 और वायु अधिनियम 1981 के तहत गैर-अनुपालन के सख्त कार्रवाई की है। प्रदूषण नियंत्रण समिति के आदेश के अनुसार, कंपनी को 1 करोड़ 47 लाख रुपये का पर्यावरणीय मुआवजा डिमांड ड्राफ्ट के माध्यम से जमा करना होगा। मुआवजा जमा करने के बाद ही बिजली कनेक्शन बहाल किया जाएगा। इसके अलावा इकाई को पर्याप्त क्षमता वाला एयर पॉल्यूशन कंट्रोल डिवाइस (APCD) स्थापित कर उसे पूरी उत्पादन प्रक्रिया के दौरान चालू रखना होगा। निर्धारित स्टैक उत्सर्जन मानकों का सख्ती से पालन करते हुए नियमित उत्सर्जन निगरानी और रिकॉर्ड भी रखना होगा। प्रदूषण नियंत्रण समिति जल और वायु प्रदूषण नियंत्रण कानूनों के तहत औद्योगिक इकाइयों के पर्यावरणीय अनुपालन की निगरानी करती है। प्रदूषण नियंत्रण समिति द्वारा बांसवाडा गारमेंट्स के खिलाफ की गई कार्रवाई दूसरी कंपनियों के लिए चेतावनी है।

दानह-दमण के उद्योगों के लिए चेतावनी: चवन्नी बचाने के चक्कर में बांसवाडा गारमेंट को अब रूपया खर्च करना पडेगा!!

संघ प्रदेश श्रीडी की प्रदूषण नियंत्रण समिति समय-समय पर उद्योगों को जल, वायु और ध्वनी प्रदूषण के बारे में चेतावनी जारी करती है। लेकिन बांसवाडा गारमेंट जैसे उद्योग प्रदूषण नियंत्रण समिति की चेतावनी को दरकिनार करके धडल्ले से प्रदूषण फैलाना जारी रखते हैं। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, जून महीन में पीसीसी ने बांसवाडा गारमेंट को वायु प्रदूषण रोकने के लिए एक संयंत्र लगाने का निर्देश दिया था। बताया जाता है कि इसकी कीमत 15 से 20 लाख रूपये होगी लेकिन बांसवाडा गारमेंट के प्रबंधन ने इस राशि को बचाने के लिए निर्देश की अवहेलना कर अपना उत्पादन वायु प्रदूषण के साथ जारी रखा। बांसवाडा गारमेंट यह भी भूल गया कि उसकी कंपनी के महज 500 मीटर पर जवाहर नवोदय विद्यालय है जिसमें बडी संख्या में बच्चे पढाई करते हैं और निवास भी करते हैं। इस प्रकार के वायु प्रदूषण का नजदीक के क्षेत्र में ज्यादा बुरा प्रभाव पडता है। प्रदूषण नियंत्रण समिति के संज्ञान में यह बात आई की जून महीने से बांसवाडा गारमेंट को वायु प्रदूषण रोकने के लिए संयंत्र लगाने के निर्देश दिया था लेकिन उनके द्वारा अभी तक संयंत्र नहीं लगाया गया है और वायु प्रदूषण फैलाना जारी रखा है तो विभाग की ओर से तत्काल प्रभाव से एक सप्ताह पहले कंपनी को बंद करने का नोटिस दे दिया। साथ ही साथ 1 करोड 47 लाख रूपये का जुर्माना भी ठोक दिया। यहां वो कहावत सटीक बैठती है कि चवन्नी बचाने के चक्कर में रूपया खर्च हो गया। अब कंपनी को 1 करोड 47 लाख रूपये का जुर्माना तो चुकाना ही है साथ ही साथ संयंत्र लगाने का खर्च भी तो करना ही है। बांसवाडा गारमेंट पर हुई कार्रवाई दादरा नगर हवेली और दमण की उन कंपनियों के लिए सबक है जो पीसीसी के निर्देश को चवन्नी बचाने के चक्कर में मानते नहीं है बाद में कंपनी बंद करने और लाखों रूपये का जुर्माना भरने की नौबत आती है।

दमण नमो एयरपोर्ट से शुरू हुई मुंबई-दमण-अहमदाबाद की सीधी विमान सेवा

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण 25 अगस्त। दमण के नमो एयरपोर्ट से आज मुंबई-दमण-अहमदाबाद हवाई सेवा का शुभारंभ हो गया। दमण की हवाई कनेक्टिविटी को नई उड़ान मिलने के साथ ही यात्रियों की संख्या में भी लगातार इजाफा देखने को मिल रहा है। नई हवाई सेवा का संचालन एलायंस एयर द्वारा किया जा रहा है। नई हवाई सेवा शुरू होने से दमण से अहमदाबाद और मुंबई जाने वाले यात्रियों को अब बेहतर और तेज यात्रा विकल्प मिल गया है। किफायती किराये में हवाई यात्रा की सुविधा उपलब्ध होने से आम यात्रियों के साथ-साथ व्यापारी, उद्यमी और कामकाजी यात्रियों में भी उत्साह देखा जा रहा है। नई विमान सेवा मंगलवार, गुरुवार और शनिवार को संचालित होगी। विमान सुबह 7.05 बजे मुंबई से रवाना होकर 7.45 बजे दमण पहुंचा। इसके बाद दमण से 8.10 बजे उड़ान भरकर 9.20 बजे अहमदाबाद पहुचा। वापसी में विमान अहमदाबाद से 12.35 बजे रवाना होकर 1.45 बजे दमण पहुंचा। इसके बाद दमण से 2.10 बजे मुंबई के लिए उड़ान भरकर 2.50 बजे मुंबई पहुंचा। दमण से मुंबई सड़क मार्ग से जाने वाले यात्रियों को अक्सर भारी ट्रैफिक और जाम का सामना करना पड़ता है। ऐसे में सीधी विमान सेवा शुरू होने से मुंबई जाने वाले यात्रियों को काफी राहत मिलने की उम्मीद है। कम समय में मुंबई पहुंचने का विकल्प मिलने से हवाई यात्रा को लेकर लोगों की रुचि बढ़ रही है। अहमदाबाद और मुंबई जैसे प्रमुख व्यावसायिक शहरों से दमण की सीधी हवाई कनेक्टिविटी मजबूत होने से क्षेत्र के उद्योग, व्यापार और पर्यटन को भी लाभ मिलने की उम्मीद है। गुजरात और महाराष्ट्र के प्रमुख शहरों से बेहतर कनेक्टिविटी मिलने से कारोबारियों और उद्यमियों के लिए आवागमन आसान होगा।

कुंवर बासित अली ने भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष का संभाला पदभार

- संघ प्रदेश श्रीडी भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा की प्रदेश महामंत्री तमन्ना मिठाणी, प्रदेश उपाध्यक्ष मोहम्मद अली, मनीषा कुमारी किसान और प्रदेश ट्रेजरर नरेंद्र सिंह रेनीस ने दिल्ली में उपस्थित रहकर अल्पसंख्यक मोर्चा के नवनियुक्त राष्ट्रीय अध्यक्ष कुंवर बासित अली को दी बधाईयां

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली/दमण, 25 अगस्त। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन ने हाल ही में अपनी नई टीम घोषित की है। जिसके तहत भाजपा के विभिन्न मोर्चो के राष्ट्रीय अध्यक्षों सहित की नियुक्ति की है। इसके तहत कुंवर बासित अली को भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा का राष्ट्रीय अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। कुंवर बासित अली ने दिल्ली में भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष का विधिवत पदभार ग्रहण किया। इस मौके पर अल्पसंख्यक मोर्चा के देशभर से आए पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने कुंवर बासित अली को बधाई दी। इसी क्रम में संघ प्रदेश दादरा नगर हवेली और दमण-दीव की भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा की प्रदेश महामंत्री तमन्ना मिठाणी, प्रदेश उपाध्यक्ष मोहम्मद अली, मनीषा कुमारी किसान और प्रदेश ट्रेजरर नरेंद्र सिंह रेनीस ने मौजूद रहकर भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष कुंवर बासित अली को गुलदस्ता भेंटकर नई जिम्मेदारी के लिए बधाईयाँ दी। बासित अली ने कहा कि भाजपा सरकार में अल्पसंख्यकों के हित के लिए कई कल्याणकारी योजनाएं चल रही है। अल्पसंख्यक वर्ग के बीच अब भाजपा अछूत नहीं है। कुंवर बासित अली ने कहा कि मुसलमान भाइयों को सोचना चाहिए कि नरेंद्र मोदी से अच्छा प्रधानमंत्री और हिंदू से अच्छा दोस्त कोई नहीं हो सकता। हम सभी को मिलकर भारतीय संस्कृति को साथ लेकर चलना चाहिए और प्रधानमंत्री मोदी के हाथ को मजबूत करना चाहिए।

प्रशासक प्रफुल पटेल के सुशासन एवं विकास कार्यकाल के 10 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में डीएमसी ने किये कई कार्यक्रम

डीएमसी प्रेसिडेंट दीपिका टंडेल के नेतृत्व में सफाई अभियान और ड्रॉइंग प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण 25 अगस्त। संघ प्रदेशों के प्रशासक प्रफुल पटेल के सुशासन एवं विकास कार्यकाल के 10 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में डीएमसी प्रेसिडेंट दीपिका टंडेल के नेतृत्व में कई कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। डीएमसी प्रेसिडेंट दीपिका टंडेल ने काउंसिलरों के साथ मिलकर समुद्र तट पर स्वच्छता अभियान चलाया। इसके साथ ही आज डीएमसी कार्यालय पर स्कूल के छात्रों के लिए ड्रॉइंग कम्पटीशन का आयोजन किया गया। जिसमें कक्षा 6 से लेकर 8 तक के छात्रों ने हिस्सा लिया। विद्यार्थियों ने प्रशासक प्रफुल पटेल के नेतृत्व में प्रदेश में हुए विकास कार्यों की थीम पर चित्र बनाकर अपनी-अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। डीएमसी प्रेसिडेंट दीपिका टंडेल एवं अन्य जनप्रतिनिधियों ने बच्चों को पुरस्कार, ट्रॉफी एवं सर्टिफिकेट देकर प्रोत्साहित किया।

शोपियां में 3 संदिग्ध आतंकी गिरफ्तार, 2 हैंड ग्रेनेड बरामद

श्रीनगर,(एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में आतंकियों और उनके सहयोगियों के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत सुरक्षाबलों को बड़ी सफलता मिली है। शोपियां जिले में सोमवार रात की गई चेकिंग के दौरान सुरक्षाबलों ने तीन संदिग्ध आतंकियों को गिरफ्तार किया। उनके कब्जे से दो हैंड ग्रेनेड और प्रतिबंधित आतंकी संगठन हिजबुल मुजाहिदीन के पांच पोस्टर भी बरामद किए गए हैं। पुलिस ने बरामद सामग्री को कब्जे में लेकर मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस के मुताबिक, गिरफ्तार आरोपियों की पहचान कुलगाम निवासी जुनैद अहमद डार, आमिर यूसुफ और जुनैद मुजफ्फर के रूप में हुई है। सुरक्षाबलों ने नियमित जांच के दौरान संदिग्ध गतिविधियों के आधार पर तीनों को रोका और तलाशी ली। इस दौरान उनके पास से हैंड ग्रेनेड और आतंकी संगठन से जुड़े पोस्टर बरामद हुए। जांच एजेंसियां अब यह पता लगाने में जुटी हैं कि तीनों का आतंकी नेटवर्क से किस तरह का संबंध था और बरामद सामग्री उन्हें कहां से मिली।

महिला भिखारी के घर में मिली नोटों और सिक्कों से भरी 23 बोरियां

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक के मांड्या में एक बुजुर्ग महिला भिखारी की मौत के बाद उसकी झोपड़ी में नोटों और सिक्कों से भरी बोरियां मिली हैं, जिन्हें देखकर सभी हैरान रह गए। करीब 70 साल की नूरुन्निसा मांड्या के गुट्टालू लेआउट इलाके में एक छोटी सी झोपड़ी में अकेली रहती थीं। वह शहर के लोगों से मिलने वाली भीख से अपना जीवनयापन करती थी। रविवार को उनका निधन हो गया। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक उनके निधन के बाद बेंगलुरु में रहने वाले उसके दो भाई अंतिम संस्कार करने यहां पहुंचे। रस्म पूरी होने के बाद उसके भाई पड़ोसियों के साथ उसके घर गए और उसका सामान देखा। उन्हें प्लास्टिक की बोरियों में 10-20 और 50 रुपए के नोटों की गड्डियां और बोरियों में सिक्के मिले। बाद में मिली हुई रकम को दोनों भाइयों के बीच बांट दिया गया। महिला के छोटे से घर में प्लास्टिक और बोरी के 30 से ज्यादा नोटो से भरे थैले और सिक्कों से भरी बोरिया मिलीं। जब स्थानीय लोगों और रिश्तेदारों ने कैश की गिनती की, तो कुल रकम 8.40 लाख रुपए से अधिक निकली। जीवनभर बेसहारा और तंगहाली में रहने वाली महिला ने इतने सालों में गुप्त रूप से यह बड़ी रकम जमा कर रखी थी। इस घटना का वीडियो भी सोशल मीडिया पर खूब वायरल हुआ, जिसमें लोग फर्श पर नोटों के ढेर और सिक्कों की गिनती करते हुए दिखाई दे रहे हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि नूरजहां बहुत सादा जीवन जीती थीं और कोई नहीं जानता था कि उन्होंने भीख में मिले पैसों को खर्च करने के बजाय इस तरह थैलों में छिपाकर बचा रखा था। फिलहाल यह रकम उनके रिश्तेदारों को सौंप दी गई है।

अरुणाचल में बाल तस्करी का भंडाफोड़, 19 बच्चे बचाए गए, तीन दलाल गिरफ्तार

नामसाई (एजेंसी)। अरुणाचल प्रदेश में बाल तस्करी के बड़े गिरोह के खिलाफ कार्रवाई कर पुलिस ने 19 बच्चों को बचाया और मामले में तीन संदिग्ध बिचौलियों को गिरफ्तार किया है। यह कार्रवाई नामसाई जिले की बाल कल्याण समिति (सीडब्ल्यूसी) की शिकायत के बाद की गई, इस पर 17 अगस्त को नामसाई थाने में मामला दर्ज हुआ था। पुलिस के अनुसार, बच्चों को शि-योमी, वेस्ट सियांग, ईस्ट सियांग, नाहरलागुन, ईटानगर और लोंगडिंग सहित राज्य के विभिन्न हिस्सों से बरामद किया गया। मामले की संवेदनशीलता और कई जिलों से जुड़ाव को देखकर इसकी जांच के लिए विशेष जांच दल (एसआईटी) का गठन किया है। प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों से उनके बच्चों को बेहतर शिक्षा और देखभाल उपलब्ध कराने के झूठे वादे कर संपर्क किया गया था। इसके बाद इन नाबालिगों को दूसरे स्थानों पर ले जाकर कथित तौर पर घरेलू काम या होटलों में काम कराया जाता था। नामसाई के पुलिस अधीक्षक सांगे थिनले ने बताया कि बचाए गए बच्चों में अधिकतर आठ वर्ष से कम उम्र के हैं, जिसमें सबसे छोटा बच्चा करीब तीन वर्ष का है। पुलिस ने कुछ बिचौलियों और माता-पिता के बीच प्रति बच्चे 10,000 रुपये से 50,000 रुपये तक के संदिग्ध वित्तीय लेनदेन का भी पता लगाया है। बच्चों के बयान मजिस्ट्रेट के सामने दर्ज किए गए हैं। एसआईटी अब वित्तीय लेनदेन, डिजिटल साक्ष्यों और कॉल रिकॉर्ड का गहन विश्लेषण कर रही है ताकि इस पूरे गिरोह से जुड़े अन्य लोगों की पहचान की जा सके और उन्हें कानून के कटघरे में लाया जा सके।

पुरी मंदिर में नया दर्शन मॉडल : हर घंटे 8,000 श्रद्धालु कर सकते दर्शन

पुरी (एजेंसी)। श्रीजगन्नाथ मंदिर में श्रद्धालुओं की सुविधा और भीड़ प्रबंधन को बेहतर बनाने के लिए अगले तीन से चार महीनों के भीतर नई कतार-आधारित दर्शन व्यवस्था लागू होगी। ओडिशा के कानून मंत्री पृथ्वीराज हरिचंदन ने इसकी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस प्रस्तावित व्यवस्था पर चर्चा के लिए भुवनेश्वर स्थित लोक सेवा भवन में उच्चस्तरीय बैठक आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता उन्होंने स्वयं की। बैठक में पुरी के पुलिस अधीक्षक (एसपी) सहित कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

राहुल के निशाने पर सिर्फ हिंदू महिलाएं क्यों, अल्पसंख्यक क्यों नहीं

केंद्रीय मंत्री रिजिजू का सवाल- समाज सुधार के नाम पर चुनिंदा रवैया क्यों?

नई दिल्ली, एजेंसी।
केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के 'पितृसत्ता तोड़ो' बयान को लेकर कांग्रेस पर निशाना साधा है। रिजिजू ने सवाल उठाया कि सामाजिक सुधार और महिलाओं के अधिकारों की बात करते समय कांग्रेस और राहुल गांधी का फोकस हिंदू परंपराओं पर ही क्यों रहता है। उन्होंने पूछा कि अल्पसंख्यक समुदायों की महिलाओं की स्थिति और उनके अधिकारों को लेकर कांग्रेस क्यों नहीं बोलती।
केंद्रीय मंत्री रिजिजू ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर कांग्रेस के सामाजिक सुधार के दृष्टिकोण को चुनिंदा बताया। उन्होंने कहा कि यदि कांग्रेस वास्तव में महिलाओं के अधिकारों और समानता के लिए खड़ी है, तो उसे किसी एक समुदाय तक सीमित रहने के बजाय हर समुदाय की महिलाओं के मुद्दों पर आवाज उठानी चाहिए। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि महिलाओं

के अधिकारों और सम्मान का मुद्दा किसी धर्म या समुदाय तक सीमित नहीं है। उनका तर्क था कि समाज में मौजूद असमानताओं को दूर करने की कोशिश सभी वर्गों और समुदायों की महिलाओं के लिए समान रूप से होनी चाहिए। उन्होंने कांग्रेस से सवाल किया कि यदि सामाजिक रूढ़ियों और पितृसत्ता के खिलाफ लड़ाई की बात की जा रही है, तो अल्पसंख्यक समुदायों की महिलाओं की समस्याओं को भी उसी गंभीरता से क्यों नहीं उठाया जाता।

बेटियों को कमतर आंककर समाज को न बांटें

केंद्रीय मंत्री रिजिजू ने कहा कि महिलाओं को लेकर राजनीतिक बहस ऐसी नहीं होनी चाहिए, जिससे समाज में किसी समुदाय के प्रति अलग नजरिया पैदा हो। उन्होंने अपील की कि बेटियों को कमतर आंककर समाज को बांटने की कोशिश नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कांग्रेस के सामाजिक सुधार के दावों पर सवाल उठाते हुए कहा कि महिलाओं के सशक्तीकरण की वास्तविक लड़ाई तभी सार्थक होगी, जब इसमें धर्म, समुदाय और वर्ग के आधार पर कोई भेदभाव न हो। रिजिजू के बयान को राहुल गांधी और कांग्रेस की सामाजिक नीतियों पर भाजपा की राजनीतिक प्रतिक्रिया के तौर पर देखा जा रहा है।

सुप्रीम कोर्ट के समाधान में 1712 मामलों का हुआ समाधान

नई दिल्ली (एजेंसी)। उच्चतम न्यायालय का समाधान कार्यक्रम, जो एक विशेष लोक अदालत और मध्यस्थता पहल है, बेहद सफल रहा है। 21 से 23 अगस्त तक चले इस तीन दिवसीय आयोजन में कुल 1,712 लंबित मामलों का निपटारा किया गया। पक्षकारों की आपसी सहमति और समझौते के परिणामस्वरूप समाप्त हुए इन मामलों में 240.94 करोड़ रुपये की राशि वितरित की गई, जो इस कार्यक्रम की व्यापक सफलता को दर्शाती है। इस समाधान कार्यक्रम की शुरुआत इसी साल 21 अप्रैल को हुई थी, जिसका मुख्य उद्देश्य लंबे समय से चले आ रहे विवादों को न्यायालय की लंबी और जटिल प्रक्रिया के बजाय मध्यस्थता और आपसी सहमति से सुलझाना था। इस विशेष लोक अदालत में मामलों को लाने से पहले, पक्षकारों और उनके वकीलों के साथ गहन बातचीत के माध्यम से समझौते की कोशिशें की गई थीं, ताकि त्वरित और प्रभावी समाधान सुनिश्चित किया जा सके। तीन दिवसीय इस कार्यक्रम में कुल 3,285 मामले सूचीबद्ध किए गए, जिनमें से पहले दिन 402, दूसरे दिन 350, और तीसरे दिन 912 मामलों का समाधान किया गया। इस प्रकार, लोक अदालत के माध्यम से कुल 1,664 मामले सुलझे, जबकि 48 मामलों का निपटारा मध्यस्थता के जरिए हुआ, जिससे कुल 1,712 विवादों का समाधान संभव हो सका। लोक अदालत की पीठों की अध्यक्षता भारत के मुख्य न्यायाधीश, उच्चतम न्यायालय के वरिष्ठ न्यायाधीशों और वरिष्ठ वकीलों ने की। इनमें मुख्य रूप से वैवाहिक विवाद, संपत्ति विवाद, सड़क हादसों से जुड़े मुआवजे के मामले, जमीन अधिग्रहण और मुआवजा, कर, सेवा और श्रम संबंधी मामले शामिल थे। इस संस्थागत पहल को सफल बनाने के लिए न्यायाधीशों ने शनिवार और रविवार को भी काम किया। इस पहल से न केवल लोगों के पैसे और समय की बचत हुई, बल्कि न्यायालय का बहुमूल्य समय भी उन मामलों के लिए बचाया जा सका जिनकी सुनवाई अनिवार्य है।

कंगना और अभिजीत के बीच अंग्रेजी पर छिड़ी जंग

नई दिल्ली, एजेंसी।
अपने बेबाक बयानों के लिए अक्सर सुर्खियों में रहने वाली अभिनेत्री और अब सांसद कंगना रनौत ने एक बार फिर एक नए विवाद को जन्म दिया है। इस बार उन्होंने कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के संस्थापक अभिजीत दीपके के साथ अपनी अंग्रेजी बोलने की शैली की तुलना की है, जिससे सोशल मीडिया पर चर्चा तेज हो गई है। कंगना ने एक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर अपनी एक स्टोरी साझा की, जिसमें उन्होंने दीपके के अंग्रेजी में दिए गए एक बयान की रील के साथ अपना कुछ साल पुराना अंग्रेजी का भाषण भी दिखाया। उनके पुराने भाषण में कंगना फिल्म उद्योग में एक महिला कलाकार के रूप में अपनी छवि पर बात करती नजर आती हैं। साझा की गई रील में उन्होंने लिखा, 12वीं पास कंगना रनौत बनाम बोस्टन यूनिवर्सिटी के सीजेपी के दीपके का अंग्रेजी स्तर। एक शानदार है तो वहीं दूसरे को रीबूट की जरूरत है।
यह गौरतलब है कि कंगना पहले भी अपनी अंग्रेजी को लेकर फिल्म उद्योग में संघर्ष कर चुकी हैं, जहां उन्हें अपनी भाषा के लिए उपहास का सामना करना पड़ा था, जिसके बाद उन्होंने बाहरी लोगों का इस आधार पर मजाक न बनाने की सीख पर जोर दिया था। सीजेपी नेता दीपके ने इस तुलना के बाद अपनी एक सोशल मीडिया स्टोरी में एक प्रशंसक के सवाल का जवाब दिया। उनसे पूछा गया था कि वह अंग्रेजी बोलते समय क्यों झिझकते हैं, जिस पर अभिजीत ने कहा कि कैमरे के सामने उन्हें अक्सर संकोच होता है। इसके अगले दिन, उन्होंने सभी राज्यों के शिक्षा मंत्रियों को पत्र लिखकर सरकारी स्कूलों के बुनियादी ढांचे, शिक्षकों की रिक्तियों और धन से संबंधित डेटा की मांग की। यह पहली बार नहीं है जब सांसद कंगना का सीजेपी नेताओं के साथ सार्वजनिक विवाद हुआ है।

चोर दरवाजे से जारी है आरक्षण खत्म करने की साजिश

कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे ने कहा- सरकार साजिशन सरकारी पदों को खाली रख रही

नई दिल्ली, एजेंसी।
कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने केंद्र सरकार पर अनुसूचित जाति (एससी), अनुसूचित जनजाति (एसटी), अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (ईडब्ल्यूएस) के आरक्षण को खत्म करने की साजिश रचने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि सरकार सरकारी पदों को खाली रखकर और स्थायी नौकरियों की जगह कॉन्ट्रैक्ट पर भर्ती को बढ़ावा देकर आरक्षण के संवैधानिक अधिकारों को कमजोर कर रही है। खड़गे ने कहा कि भाजपा की नीति का पर्दाफाश हो चुका है और यह संविधान निर्माता डॉ. भीमराव आंबेडकर द्वारा दिए गए सामाजिक न्याय के अधिकारों के खिलाफ है।
कांग्रेस अध्यख खड़गे ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट करते हुए दावा किया, कि केंद्र सरकार में खाली पदों की संख्या लगातार बढ़ी है। उनके मुताबिक, वर्ष 2015 में केंद्र सरकार में करीब 4.21 लाख पद खाली थे, जो 2024 तक बढ़कर 8.24 लाख हो गए। उन्होंने कहा

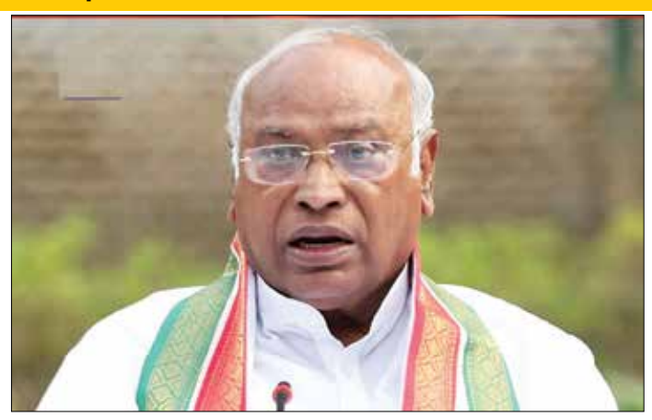

कि बड़ी संख्या में पद खाली रहने का सीधा असर उन वर्गों पर पड़ता है, जिन्हें सरकारी नौकरियों में आरक्षण का लाभ मिलता है। कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे ने विभागवार आंकड़ों का हवाला देते हुए कहा कि रेलवे में करीब 2.40 लाख, रक्षा विभाग में 2.41 लाख और गृह मंत्रालय में 1.10 लाख पद खाली हैं। उन्होंने सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (पीएसयू) में स्थायी रोजगार घटने और कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों की संख्या बढ़ने का भी आरोप लगाया।

पीएसयू में 5 लाख से ज्यादा स्थायी नौकरियां खत्म

खड़गे के अनुसार, पीएसयू में करीब 5.1 लाख स्थायी नौकरियां खत्म हुई हैं, जबकि कॉन्ट्रैक्ट पर काम करने वाले कर्मचारियों की हिस्सेदारी 19 प्रतिशत से बढ़कर 49 प्रतिशत हो गई है। उन्होंने कहा कि स्थायी पदों पर आरक्षण का प्रावधान लागू होता है, लेकिन कॉन्ट्रैक्ट आधारित रोजगार बढ़ने से आरक्षण का दायरा स्वाभाविक रूप से सीमित होता जाता है।

मामला सिर्फ रोजगार का नहीं

कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे ने कहा कि यह मुद्दा केवल रोजगार उपलब्ध कराने का नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय से जुड़ा है। उन्होंने तर्क दिया कि यदि सरकारी पद खाली रखे जाएंगे तो आरक्षित वर्गों के लिए उपलब्ध अवसर भी कम होते जाएंगे। इसी तरह, पीएसयू के निजीकरण से आरक्षित सरकारी नौकरियों की संख्या घट सकती है और स्थायी पदों को कॉन्ट्रैक्ट में बदलने से आरक्षण का लाभ प्रभावित होगा। कांग्रेस अध्यक्ष ने आरोप लगाया कि आरक्षण खत्म करने के लिए संविधान में सीधे संशोधन की जरूरत नहीं है। उनके मुताबिक, आरक्षण वाले स्थायी पदों को ही कम या खत्म कर देना इसके लिए पर्याप्त है। उन्होंने इसे सामाजिक न्याय और संविधान की मूल भावना के खिलाफ भाजपा का एजेंडा करार दिया।

टीएमसी विधायक ने की वापसी कहा- दीदी ही सब कुछ

कोलकाता, एजेंसी।
पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनावों के बाद तृणमूल कांग्रेस के भीतर मची कलह के बीच अब ममता बनर्जी से बागी हुए विधायक वापस पार्टी में लौटने लगे हैं। उत्तर 24 परगना जिले की आमडांगा विधानसभा सीट से तृणमूल कांग्रेस के विधायक कासेम सिद्दीकी ने बागी गुट को छोड़कर पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के खेमे में वापस लौटने की घोषणा की है। पार्टी में घर वापसी के बाद उन्होंने भावनात्मक रूप से कहा है कि दीदी ही सब कुछ हैं। गौरतलब है कि इससे पहले, पार्टी के 50 से अधिक विधायक ममता बनर्जी से बागी होकर विपक्ष के नेता ऋतब्रत बनर्जी की अगुवाई वाले गुट में शामिल हो गए थे, और उन्होंने ममता बनर्जी के खिलाफ मोर्चा खोल दिया था। अब इस मुस्लिम विधायक ने ममता बनर्जी की जमकर प्रशंसा की है।
ममता बनर्जी के प्रति अपनी वफादारी का दावा करते हुए, कासेम सिद्दीकी ने बागी गुट को छोड़ने के पीछे की वजह भी स्पष्ट की। सिद्दीकी ने एक बयान में कहा कि उनके साथ धोखा हुआ था। उन्होंने बताया कि उन्हें यह कहकर दस्तावेजों पर हस्ताक्षर कराए गए थे कि ये हस्ताक्षर दीदी तक पहुंचाए जाएंगे और बागी गुट भी ममता बनर्जी के नेतृत्व में ही काम करेगा। सिद्दीकी ने आगे बताया कि जब वे उस गुट के साथ जुड़े, तो उन्होंने पाया कि उसके कामकाज में तृणमूल कांग्रेस सुप्रीमो का कोई नाम या जिक्र ही नहीं था। उन्होंने भावुक होते हुए कहा, दीदी ही हमारे लिए सब कुछ हैं। उन्होंने ही हमें टिकट दिया और विधानसभा भेजा। हमने उनकी तस्वीर दिखाकर लोगों से वोट मांगे और लोगों ने भी उन्हें देखकर ही हमें चुना। हम जब तक राजनीति में हैं, दीदी के साथ ही रहेंगे।
यह उल्लेखनीय है कि हुगली जिले के फुरफुरा शरीफ दरगाह से संबंध रखने वाले पीरजादा कासेम सिद्दीकी की मुस्लिम समुदाय के बीच काफी मजबूत पकड़ मानी जाती है। वे पिछले साल ही तृणमूल कांग्रेस में शामिल हुए थे। पार्टी ने उन्हें राज्य का महासचिव बनाया था और विधानसभा चुनाव में आमडांगा सीट से टिकट दिया था, जिस पर उन्होंने जीत हासिल की थी। उनकी वापसी पार्टी के लिए एक सकारात्मक संकेत मानी जा रही है। इधर, तृणमूल कांग्रेस में आंतरिक कलह अभी भी जारी है। पार्टी के दोनों गुटों ने 28 अगस्त को मेयो रोड पर गांधी प्रतिमा के पास तृणमूल छात्र परिषद का स्थापना दिवस मनाने की अनुमति के लिए अदालत का दरवाजा खटखटाया है। ममता बनर्जी के नेतृत्व वाले कालीघाट गुट ने हाल ही में कोर्ट में अर्जी दाखिल कर पारंपरिक जगह पर कार्यक्रम आयोजित करने की अनुमति के लिए तत्काल सुनवाई की मांग की। अदालत ने जल्द सुनवाई की याचिका को स्वीकार कर लिया है।

17वीं बार जेल से बाहर आया रेप का दोषी, गुरमीत राम रहीम को 21 दिन की फरलो

रोहतक, एजेंसी।
डेरा सच्चा सौदा प्रमुख गुरमीत राम रहीम सिंह एक बार फिर हरियाणा के रोहतक स्थित हाई सिक्योरिटी सुनारिया जेल से 21 दिन की फरलो पर बाहर आ गया है। वर्ष 2020 के बाद से डेरा प्रमुख की यह 17वीं अस्थायी रिहाई है। मंगलवार सुबह करीब 6:05 बजे कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच जेल से बाहर निकलने के बाद वह सिरसा स्थित डेरा मुख्यालय के लिए रवाना हो गया। राम रहीम दो महिला अनुयायियों से बलात्कार और अन्य गंभीर मामलों में सजा काट रहा है। इससे पहले वह 26 जून को 30 दिन की पैरोल पूरी करने के बाद सुनारिया जेल लौटा था। यानी करीब दो महीने से भी कम समय बाद उसे एक बार फिर अस्थायी रिहाई मिली है।
डेरा प्रमुख को अगस्त 2017 में दो महिला अनुयायियों से दुष्कर्म के मामले में दोषी ठहराए जाने के बाद सुनारिया जेल भेजा गया था। इसके बाद उसे अन्य मामलों में भी दोषी ठहराया गया, जिनमें सिरसा के पत्रकार राम चंद्र छत्रपति की हत्या का मामला भी शामिल है। मंगलवार की इस रिहाई के साथ राम रहीम को जेल में रहने के दौरान अब तक 17 बार पैरोल या फरलो मिल चुकी है। गंभीर आपराधिक मामलों में सजा काट रहे राम रहीम को बार-बार अस्थायी रिहाई मिलने को लेकर अक्सर सवाल और सार्वजनिक आलोचनाएं होती रही हैं। इस साल जनवरी में राम रहीम को 40 दिन की पैरोल मिली थी। इसके बाद मई में उसे 30 दिन की पैरोल पर रिहा किया गया था। यह अवधि पूरी होने के बाद वह 26 जून को रोहतक की सुनारिया जेल लौट आया था। अब 21 दिन की फरलो मिलने के बाद राम रहीम एक बार फिर जेल से बाहर है।
राम रहीम की यह अस्थायी रिहाई हरियाणा गुड कंडक्ट प्रिजनर्स (टेम्परेरी रिलीज) एक्ट, 2022 के प्रावधानों के तहत होती है। इस नियम के अनुसार पात्र कैदियों को एक कैलेंडर वर्ष में अधिकतम 70 दिन की पैरोल और 21 दिन की फरलो दिए जाने का प्रावधान है। हालांकि, यह रिहाई पूरी तरह से संबंधित कानूनी शर्तों और सक्षम प्राधिकारी की मंजूरी पर निर्भर करती है। बार-बार मिलने वाली इन रिहाइयों ने न्याय प्रणाली और जेल नियमों के क्रियान्वयन पर कई बार गंभीर सवाल खड़े किए हैं, जिस पर समाज में निरंतर चर्चा होती रहती है।

पिछले 8 सालों में भारत में स्कूलों की संख्या घटी, 11 करोड़ बच्चे हुए बाहर

नई दिल्ली, एजेंसी।
कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) ने हाल ही में 'स्कूल ठीक करो' अभियान शुरू किया है। इस अभियान के जरिए ग्रामीण इलाकों के सरकारी स्कूलों में खराब बुनियादी ढांचे, शिक्षकों और सुविधाओं की कमी जैसे मुद्दों को उठाया। अभियान में सरकारी स्कूलों की घटती संख्या, छात्रों के नामांकन में गिरावट और निजी स्कूलों पर बढ़ती निर्भरता को उजागर किया गया है।
मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक आंकड़ों से पता चलता है कि पिछले 8 सालों में भारत में स्कूलों की संख्या में कमी आई है। इसी दौरान छात्रों के नामांकन में भी गिरावट आई, हालांकि छात्र-शिक्षक अनुपात में सुधार हुआ है। देश में 2018-19 में स्कूलों की कुल संख्या 15.5 लाख थी, जो 2025-26 में घटकर 14.6 लाख रह गई। छात्रों के नामांकन में भी कमी आई है। छात्रों का नामांकन 2018-19 में 26 करोड़ से घटकर 2025-26 में यह 24.7 करोड़ रह गया है।
वहीं, छात्र-शिक्षक अनुपात 2018-19 में 27 छात्रों पर एक शिक्षक से सुधरकर 2025-26 में 24 छात्रों पर एक शिक्षक हो गया है। यह सुधार मुख्य रूप से छात्रों की संख्या घटने की वजह से हुआ है, न कि शिक्षकों की संख्या बढ़ने के कारण। 2025-26 में करीब 31 फीसदी पात्र बच्चों का स्कूलों में नामांकन नहीं था यानी 3 से 17 साल की आयु के करीब 11.1 करोड़ बच्चे स्कूल शिक्षा से बाहर थे। यह स्थिति पिछले 8 सालों से बनी हुई है। अधिकांश सरकारी स्कूलों में बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध हैं। करीब 99 फीसदी सरकारी स्कूलों में पीने के पानी की सुविधा, 94 फीसदी में बिजली और 96 फीसदी में शौचालय उपलब्ध हैं। हालांकि, डिजिटल सुविधाओं के मामले में स्थिति अभी कमजोर है। केवल 25 फीसदी स्कूलों में कंप्यूटर, 16 फीसदी में प्रोजेक्टर और 6 फीसदी स्कूलों में डिजिटल लाइब्रेरी हैं। सरकारी स्कूलों की संख्या में आई गिरावट के साथ शिक्षा बजट में भी कमी आई है। कुल केंद्रीय बजट में स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग की हिस्सेदारी वित्त वर्ष 2010 में 1.9 फीसदी थी, जो घटकर वित्त 2026 में 1.4 फीसदी रह गई है।

अमित शाह का गुजरात दौरा 26 से 28 अगस्त तक: अहमदाबाद और अमरेली में रहेंगे कई अहम कार्यक्रम

अहमदाबाद (ईएमएस)। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह 26 अगस्त से गुजरात के तीन दिवसीय दौरे पर आ रहे हैं। उनका गुजरात प्रवास 26 से 28 अगस्त तक रहेगा। इस दौरान वे अहमदाबाद और अमरेली सहित विभिन्न सार्वजनिक एवं संस्थागत कार्यक्रमों में भाग लेंगे। मिली जानकारी के अनुसार, अमित शाह 26 अगस्त को अहमदाबाद एयरपोर्ट पहुंचेंगे, जिसके बाद उनके गुजरात प्रवास के विभिन्न कार्यक्रमों की शुरुआत होगी। दौरे के दूसरे दिन 27 अगस्त को अमित शाह अमरेली जिले के धारी में आयोजित एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम में शामिल होंगे। यहां वे 'गुजरात गौरव संकुल' का लोकार्पण करेंगे। इसे उनके तीन दिवसीय गुजरात दौरे के प्रमुख कार्यक्रमों में से एक माना जा रहा है। धारी के कार्यक्रम के बाद अमित शाह अहमदाबाद लौटेंगे। 27 अगस्त की शाम वे गुजरात विद्यापीठ के दीक्षांत समारोह में उपस्थित रहेंगे। इसके बाद उसी रात अहमदाबाद के घाटलोडिया क्षेत्र में आयोजित जनता दरबार कार्यक्रम में भी उनकी उपस्थिति रहेगी। इस प्रकार, तीन दिवसीय गुजरात दौरे के दौरान केंद्रीय गृह मंत्री के कार्यक्रम मुख्य रूप से अहमदाबाद और अमरेली में केंद्रित रहेंगे। विभिन्न सार्वजनिक, सामाजिक और संस्थागत कार्यक्रमों में उनकी भागीदारी के कारण इस दौरे पर राजनीतिक और स्थानीय स्तर पर भी विशेष नजर रहेगी। 28 अगस्त को अमित शाह गुजरात से दिल्ली के लिए रवाना होंगे। इसके साथ ही 26 अगस्त को अहमदाबाद आगमन से शुरू होने वाला उनका तीन दिवसीय गुजरात दौरा संपन्न होगा।

मंदिर-जामा मस्जिद विवाद की सुनवाई टली - अब 29 सितंबर को अगली तारीख

मुरादाबाद(ईएमएस)। चंदौसी की अदालत में चल रहे श्री हरिहर मंदिर-शाही जामा मस्जिद विवाद में मंगलवार को सुनवाई नहीं हो सकी। सुप्रीम कोर्ट की ओर से मामले की कार्रवाई पर लगी रोक के चलते सिविल जज (सीनियर डिवीजन) आदित्य सिंह की अदालत ने अगली सुनवाई के लिए 29 सितंबर की तारीख तय की है। मंगलवार को मामला सुनवाई के लिए सूचीबद्ध था। हिंदू पक्ष के अधिवक्ता गोपाल शर्मा ने बताया कि सुप्रीम कोर्ट के आदेश के कारण स्थानीय अदालत में फिलहाल कोई कार्रवाई नहीं हुई। अब मामले की अगली सुनवाई 29 सितंबर को होगी। यह कानूनी विवाद 19 नवंबर 2024 को शुरू हुआ था। हिंदू पक्ष के अधिवक्ता हरिशंकर जैन और विष्णु शंकर जैन समेत अन्य याचिकाकर्ताओं ने संभल की चंदौसी जिला अदालत में वाद दाखिल कर दावा किया था कि शाही जामा मस्जिद का निर्माण मंदिर स्थल पर किया गया है। मुस्लिम पक्ष ने मामले की पोषणीयता को इलाहाबाद हाईकोर्ट में चुनौती दी थी। हालांकि 19 मई 2025 को हाईकोर्ट ने निचली अदालत के आदेश को बरकरार रखते हुए कोर्ट की निगरानी में सर्वे कराने और मामले की सुनवाई आगे बढ़ाने का निर्देश दिया था।

माता-पिता ने बेटे को 4.5 लाख में बेचा

मोतिहारी(ईएमएस)। मोतिहारी में एक बच्चे को जन्म के दूसरे ही दिन उसके माता-पिता ने बेच दिया। सौदे में दंपती, आशा कार्यकर्ता, सौदा कराने वाली बिचौलिया और बच्चे को खरीदने वाली महिला शामिल है। पूरी डील 4.5 लाख में हुई। नगर थाना की पुलिस ने पूरे मामले का खुलासा करते हुए नवजात बच्चे को सकुशल रेस्क्यू कर लिया है। बच्चे के माता-पिता, महिला दलाल, आशा कार्यकर्ता और बच्चा खरीदने वाली महिला कुल 5 लोगों को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने माता-पिता के पास से सौदे के मिले 1.50 लाख रुपए भी बरामद कर लिए हैं। महिला दलाल, आशा कार्यकर्ता को डेढ़-डेढ़ लाख मिलने वाले थे। पुलिस जांच के दौरान पता चला कि गिरफ्तार आरोपी दंपती प्रमोद साहनी और इंदु देवी के पहले से ही छह बच्चे हैं। दंपती ने सातवें बच्चे के जन्म लेते ही रुपयों की लालच में नवजात का सौदा कर डाला। वहीं बच्चे को खरीदने वाली महिला निःसंतान है। काफी समय से बच्चा नहीं होने पर उसने आशा कार्यकर्ता से ये बातें शेयर की। जिसके बाद आशा कार्यकर्ता ने डील शुरू हुई।

शोपियां में 6 संदिग्ध आतंकी गिरफ्तार

श्रीनगर(ईएमएस)। जम्मू-कश्मीर के शोपियां जिले में सुरक्षाबलों ने सोमवार रात चेकिंग के दौरान 6 संदिग्ध आतंकियों को गिरफ्तार किया। उनके पास से 2 हैंड ग्रेनेड और हिजबुल मुजाहिदीन के पांच पोस्टर मिले हैं। बरामद सामान को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी गई है। वहीं, पुलवामा में भी सुरक्षाबलों ने यरवान जंगल में सर्च ऑपरेशन के दौरान दो संदिग्ध आतंकी सहयोगियों को गिरफ्तार किया है। उनकी पहचान लतीफ अहमद दीदाद और एजाज अहमद बजाद के रूप में हुई है। पुलवामा में पकड़ाए संदिग्धों के पास से एक पिस्तौल, 12 कारतूस और हैंड ग्रेनेड मिले हैं। पुलिस ने आम्र्स एक्ट और यूएपीए की संबंधित धाराओं में केस दर्ज किया है। सुरक्षा एजेंसियां हथियारों के सोर्स और दोनों के आतंकी नेटवर्क से संबंधों की जांच कर रही हैं।

पंजाब में अकेले चुनाव लड़ेगी बसपा

लखनऊ(ईएमएस)। बहुजन समाज पार्टी प्रमुख मायावती ने मंगलवार को पंजाब विधानसभा चुनाव को लेकर बड़ा ऐलान किया। उन्होंने कहा कि बसपा पंजाब में बिना किसी गठबंधन या समझौते के अकेले चुनाव लड़ेगी। गठबंधन से पार्टी को सीट और वोट प्रतिशत दोनों में नुकसान होता है। इससे कार्यकर्ताओं का मनोबल भी प्रभावित होता है। पिछली बार बसपा का अकाली दल से गठबंधन था। मायावती ने लखनऊ स्थित बसपा कार्यालय में पंजाब के पार्टी पदाधिकारियों के साथ लंबी बैठक की और चुनावी तैयारियों की समीक्षा की। उन्होंने कहा- पंजाब के साथ-साथ उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड में भी अगले साल होने वाले विधानसभा चुनावों को लेकर पार्टी की तैयारियां तेज की जाएंगी। उम्मीदवारों के चयन में कर्मठ और ईमानदार लोगों को प्राथमिकता दी जाएगी।

सुप्रीम कोर्ट से तरुण तेजपाल को बड़ा झटका

नई दिल्ली(ईएमएस)। सुप्रीम कोर्ट ने पत्रकार तरुण तेजपाल की याचिका को खारिज कर दिया है। इस याचिका में उन्होंने 2013 के उत्पीड़न मामले में आत्मसमर्पण से छूट मांगी थी। बता दें कि सुप्रीम कोर्ट ने तरुण तेजपाल को 2013 के उत्पीड़न मामले में मिली 10 साल की सजा के लिए दो हफ्ते के अंदर आत्मसमर्पण करने का निर्देश दिया है। वहीं, सुप्रीम कोर्ट ने तेजपाल की सजा और दोषसिद्धि के खिलाफ अपील पर सुनवाई के लिए 22 सितंबर की तारीख तय की है। तेजपाल ने इस आधार पर आत्मसमर्पण से छूट मांगी थी कि उनकी अपील पहले सर्वोच्च न्यायालय में सूचीबद्ध और सुनवाई के लिए पेश की जानी चाहिए। तेजपाल की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिबल ने तर्क दिया कि न्यायालय के पास उचित मामले में आत्मसमर्पण की आवश्यकता को समाप्त करने और आरोपी के आत्मसमर्पण न करने की स्थिति में भी आपराधिक अपील को सूचीबद्ध करने का अधिकार है।

एमआईबी ने केंद्र-राज्य तालमेल को मजबूत करने के लिए राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के आईएंडपीआर सचिवों के साथ आयोजित किया राष्ट्रीय सम्मेलन

वेव्स 2027 से लेकर लाइव इवेंट्स तक, मंत्रालय ने भारत की रचनात्मक अर्थव्यवस्था और मीडिया इकोसिस्टम को मजबूत करने के लिए तैयार किया रोडमैप

पीआईबी दिल्ली, 25 अगस्त। सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने आज नई दिल्ली में राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के सूचना और जनसंपर्क विभागों के सचिवों के साथ एक राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया। इस सम्मेलन में सूचना, प्रसारण, मीडिया और रचनात्मक अर्थव्यवस्था के क्षेत्रों में अहम पहलों पर चर्चा करने और आपसी तालमेल को मजबूत करने के उद्देश्य से केंद्र और राज्यों के वरिष्ठ अधिकारी एक साथ आए।

सचिव, सूचना और प्रसारण मंत्रालय सूचना और प्रसारण मंत्रालय श्री चंचल कुमार ने सम्मेलन की अध्यक्षता की और चर्चा के दौरान इसमें शामिल राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के अधिकारियों से बातचीत की। माननीय प्रधानमंत्री के उस विजन का उल्लेख करते हुए, जिसके तहत भारत की 'सॉफ्ट पावर' और रचनात्मक अर्थव्यवस्था को राष्ट्रीय प्रगति की सात धाराओं यानी 'सप्तधारा' में शामिल किया गया है, सचिव ने भारत की विशाल रचनात्मक क्षमता का लाभ उठाने और जन-संचार को मज़बूत करने के लिए केंद्र और राज्यों के बीच और अधिक मज़बूत और व्यवस्थित सहयोग की जरूरत पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि रचनात्मक अर्थव्यवस्था-जिसमें संस्कृति, रचनात्मकता और व्यापार शामिल हैं-में रोजगार पैदा करने, निवेश आकर्षित करने और वैश्विक स्तर पर भारत का प्रभाव बढ़ाने की क्षमता है। राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की अलग-अलग विशेषताओं पर जोर देते हुए, सचिव ने कहा कि रचनात्मक अर्थव्यवस्था के विकास के लिए कोई एक मॉडल नहीं हो सकता। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि हर राज्य और केंद्र शासित प्रदेश की सांस्कृतिक खूबियों, संस्थागत क्षमताओं और क्षेत्रीय प्रतिभा का इस्तेमाल करके ही उसकी रचनात्मक क्षमता को साकार किया जा सकता है। उन्होंने केंद्र और राज्यों के बीच बेहतर सहयोग के लिए कई क्षेत्रों का भी उल्लेख किया, जिनमें इंफ्रास्ट्रक्चर, कारोबारी सुगमता (ईज ऑफ डूइंग बिजनेस), क्षमता निर्माण, क्षेत्रीय कंटेंट और रचनात्मक इकोसिस्टम शामिल हैं। वेव्स 2027, वेव्स बाजार, वेवएक्स और 'क्रिएट इन इंडिया चैलेंज' जैसे राष्ट्रीय प्लेटफॉर्म देश भर के क्रिएटर्स और स्टार्ट-अप्स को बाज़ार, निवेशकों, प्रौद्योगिकी और वैश्विक भागीदारी तक बेहतर पहुंच दिला सकते हैं।

भाग लेने वाले राज्य और केंद्रशासित प्रदेश के अधिकारियों ने विभिन्न पहलों के कार्यान्वयन के संबंध में अपने अनुभव और चिंताओं को साझा किया और मंत्रालय के साथ समन्वय और जुड़ाव को और मजबूत करने के तरीकों पर चर्चा की। राज्य स्तर पर क्षमता निर्माण की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला गया, राज्यों ने बेहतर संचार, जुड़ाव और नियमित सम्मेलनों के माध्यम से मंत्रालय से अधिक समर्थन मांगा। अधिकारियों ने मंत्रालय के साथ अधिक निकटता से सहयोग करने और ऑरेंज इकोनॉमी को मजबूत करने में सक्रिय रूप से भाग लेने की इच्छा भी व्यक्त की।

सम्मेलन के दौरान, राज्य सरकारों द्वारा केबल ऑपरेटरों के लिए राइट ऑफ वे (आरओडब्ल्यू) तंत्र के कार्यान्वयन सहित कई महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा हुई, जिनमें वेव्स 2027 के लिए रोडमैप; वेव्स बाजार और बाजार पहुंच को मजबूत करना; सार्वजनिक सेवा प्रसारण बुनियादी ढांचे का विस्तार; वेव्स ओटीटी प्लेटफॉर्म पर उपयोगकर्ता-जनित रचनात्मक सामग्री का प्रचार; भारतीय सिने हब (आईसीएच) और फिल्म सुविधा कार्यालय (एफएफओ) पोर्टल का दोतरफा एकीकरण; और फिल्म शूटिंग और लाइव इवेंट की अनुमति के लिए सिंगल-विंडो आईसीएच पोर्टल को अपनाना शामिल हैं। सम्मेलन में कंटेंट सह-उत्पादन, राज्य-विशिष्ट प्रोग्रामिंग और बढ़ी हुई सार्वजनिक पहुंच के माध्यम से सार्वजनिक सेवा प्रसारण को मजबूत करने, लाइव इवेंट क्षेत्र का प्रचार; आईआईएमसी प्रशिक्षण सुविधाओं के माध्यम से डीआईपीआर अधिकारियों की क्षमता निर्माण; प्रेस सेवा पोर्टल के माध्यम से प्रेस और पत्रिकाओं का पंजीकरण (पीआरपी) अधिनियम, 2023 के तहत डिजिटल ढांचे में परिवर्तन; और समग्र शिक्षा ढांचे के तहत राज्य सरकारों को पुस्तकों की आपूर्ति के माध्यम से पुस्तकालयों को मजबूत करने पर भी विचार-विमर्श किया गया। सम्मेलन में सार्वजनिक सेवा प्रसारण (पब्लिक सर्विस ब्रॉडकास्टिंग), लाइव इवेंटस सेक्टर, डीआईपीआर अधिकारियों की क्षमता बढ़ाने, मीडिया और प्रकाशन क्षेत्र में डिजिटल बदलाव और लोगों तक पहुंचने की पहलों से जुड़े कई मुद्दों पर भी चर्चा हुई।

सचिव ने राज्य-विशिष्ट कंटेंट और लोगों तक पहुंचने के लिए पीआईबी के क्षेत्रीय कार्यालयों, राज्य सूचना और जनसंपर्क विभागों और दूरदर्शन व आकाशवाणी की क्षेत्रीय इकाइयों के बीच बेहतर तालमेल बनाने पर भी जोर दिया। उन्होंने दोहराया कि मंत्रालय रचनात्मक अर्थव्यवस्था को मज़बूत करने और लोगों के साथ संचार को बेहतर बनाने के लिए नए विचारों, राज्यों की पहलों और भागीदारी (पार्टनरशिप) मॉडल को अपनाने के लिए तैयार है। इस सम्मेलन में सूचना और प्रसारण मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ-साथ देश भर के राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के आईएंडपीआर सचिवों और प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया, जो केंद्र और राज्यों के बीच करीबी तालमेल और साझा प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

दीव के घोगला में श्री तापेश्वर महादेव युवा मंडल द्वारा आयोजित की गई भव्य कांवड़ यात्रा

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दीव, 25 अगस्त। दीव के घोघला में पवित्र श्रावण मास के अवसर पर भव्य कांवड़ यात्रा आयोजित की गई। घोघला के श्री तापेश्वर महादेव युवा मंडल ने जय भूतनाथ महादेव मंदिर से तापेश्वर महादेव मंदिर तक कांवड़ यात्रा का आयोजन किया। यह कावड यात्रा के लिए शिवभक्त सुबह 10 बजे घोघला मुख्य मार्ग पर स्थित भूतनाथ महादेव मंदिर में एकत्र हुए। जहाँ से पात्रों में जल लेकर कांवड़ यात्रा शुरू हुई। भजन-कीर्तन और बैंड-बाजे की धुन के साथ यह भव्य कांवड़ यात्रा मुख्य मार्ग और घोघला की गलियों से होते हुए तापेश्वर महादेव मंदिर पहुंची। तापेश्वर मंदिर में पहुँचे श्रद्धालूओं ने अपने आराध्यदेव शिव के शिवलिंग पर चल चढ़ाया गया और बम-बम भोले व हर-हर महादेव के जयघोष से मंदिर का परिसर गुंज उठा। इस अवसर पर बुजुर्गों, युवाओं, बच्चों, भाई-बहनों सहित उपस्थित सभी ने महादेव की पूजा- अर्चना और आरती की।

गुजरात सरकार का बड़ा पर्यावरणीय फैसला: सरकारी कार्यालयों में चरणबद्ध तरीके से बंद होंगे प्लास्टिक फोल्डर और फाइलें

गांधीनगर (ईएमएस)। गुजरात सरकार ने टिकाऊ और पर्यावरण-अनुकूल कार्यप्रणाली को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण और दूरगामी निर्णय लिया है। अब राज्य के सभी सरकारी कार्यालयों में प्लास्टिक से बने फोल्डर और फाइलों के उपयोग को चरणबद्ध तरीके से बंद किया जाएगा। इस संबंध में सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा परिपत्र जारी कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए हैं।

भारत सरकार के पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 तथा प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट रूल्स, 2016 के तहत पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाले सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग को कम करने के उद्देश्य से यह पहल की गई है। इसके तहत सरकारी कार्यालयों में प्लास्टिक आधारित स्टेशनरी के उपयोग को धीरे-धीरे कम किया जाएगा।

यह निर्णय सचिवालय के सभी विभागों, विभागाध्यक्षों के कार्यालयों, सार्वजनिक उपक्रमों, निगमों, मंडलों, स्वायत्त संस्थाओं, स्थानीय स्वराज्य संस्थाओं, सरकारी विश्वविद्यालयों तथा ग्रांट-इन-एड सहित राज्य की सभी संबंधित संस्थाओं पर लागू होगा।

दैनिक कार्यालयीन कार्यों में इस्तेमाल होने वाले प्लास्टिक फोल्डर और फाइलों की जगह अब कागज, जूट अथवा कपड़े से बने पर्यावरण-अनुकूल और टिकाऊ फाइल कवर का उपयोग किया जाएगा। वर्तमान में कार्यालयों में उपलब्ध प्लास्टिक स्टेशनरी का स्टॉक समाप्त होने के बाद नई खरीद केवल इन पर्यावरणीय दिशा-निर्देशों के अनुरूप ही की जाएगी।

स्वच्छ भारत मिशन और पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को मजबूत करते हुए गुजरात सरकार ने इस पहल के माध्यम से सरकारी प्रशासन में प्लास्टिक-मुक्त कार्यसंस्कृति स्थापित करने का संकल्प लिया है। सरकार का यह कदम पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ सरकारी व्यवस्था को अधिक टिकाऊ और जिम्मेदार बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल माना जा रहा है।

संस्कृत की गौरवगाथा से गूंजा अहमदाबाद: 2000 विद्यार्थियों ने निकाली भव्य 'संस्कृत गौरव यात्रा'

अहमदाबाद (ईएमएस)। गुजरात राज्य संस्कृत बोर्ड द्वारा आयोजित त्रि-दिवसीय संस्कृत सप्ताह महोत्सव के अंतर्गत जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय, अहमदाबाद शहर की ओर से जिला स्तरीय भव्य 'संस्कृत गौरव यात्रा' का सफल एवं उत्साहपूर्ण आयोजन किया गया। भारतीय संस्कृति, संस्कृत भाषा और वैदिक परंपराओं के गौरव को जन-जन तक पहुंचाने वाली इस यात्रा में करीब 2000 विद्यार्थियों, शिक्षकों, संतों और विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। पूरा कार्यक्रम अहमदाबाद के जिला शिक्षा अधिकारी आर. एम. चौधरी के प्रेरणादायी मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। संस्कृत भाषा के संरक्षण और संवर्धन के संदेश के साथ निकली इस यात्रा ने शहरवासियों का ध्यान आकर्षित करते हुए भारतीय ज्ञान परंपरा की समृद्ध विरासत का जीवंत परिचय कराया। यात्रा का शुभारंभ स्वामिनारायण इंटरनेशनल स्कूल से भारत माता पूजन, वेद पूजन, शंखनाद और वैदिक मंत्रोच्चार के मंगलमय वातावरण में किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में जिला शिक्षा अधिकारी आर. एम. चौधरी ने उपस्थित अतिथियों एवं प्रतिभागियों का शब्दों से स्वागत किया और संस्कृत भाषा के महत्व तथा भारतीय संस्कृति के संरक्षण की आवश्यकता पर प्रेरक उद्बोधन दिया। इस अवसर पर पूज्य स्वामी प्रेमस्वरूप शास्त्रीजी तथा गुरुकुल कलोल के स्वामी भक्तवत्सलदासजी विशेष रूप से उपस्थित रहे। दोनों संतों ने अपने आशीर्वचनों के माध्यम से विद्यार्थियों और उपस्थित जनसमुदाय को संस्कृत तथा भारतीय संस्कृति की महान परंपरा से जुड़ने का संदेश दिया। लगभग 1.5 किलोमीटर लंबी संस्कृत गौरव यात्रा में भारतीय ज्ञान और संस्कृति की विविध झलकियां देखने को मिलीं। चारों वेदों, पुराणों, प्राचीन संस्कृत ग्रंथों और ऋषि-मुनियों की वेशभूषा में सजे विद्यार्थियों के रथ और संस्कृत साहित्य पर आधारित आकर्षक झांकियां यात्रा का प्रमुख आकर्षण रहीं। ढोल और शहनाई की मधुर धुनों के बीच संस्कृत गीतों, गरबा और सुभाषितों के गायन के साथ यात्रा आगे बढ़ती रही। मार्ग में जगह-जगह नगरवासियों ने पुष्पवर्षा और वेद पूजन कर यात्रा का गर्मजोशी से स्वागत किया। इस दौरान पूरा वातावरण संस्कृत के मंत्रों और भारतीय संस्कृति की गौरवमयी भावना से सराबोर दिखाई दिया।

CHANGE OF NAME

I HAVE CHANGED MY OLD NAME FROM SORIFA KHATUN TO **NEW NAME SORIFA BEGUM** AS PER DOCUMENTS.

CHANGE OF NAME

OLD NAME: PATEL DAXABEN AKKHUBHAI
NEW NAME: PATEL DAKSHABEN AKKUBHAI
ADDRESS:- H.NO. 905, BHENSLORE, KOLIWAD, DUNETHA, NANI DAMAN, DAMAN – 396210
MOB.- 7622845156

एन्ट्रिक्स ANTRIX
एन्ट्रिक्स कॉर्पोरेशन लिमिटेड
(अंतरिक्ष विभाग के अंतर्गत भारत सरकार की कंपनी)
अंतरिक्ष भवन परिसर, न्यू बी.ई.एल रोड बेंगलूरु – 560094

एन्ट्रिक्स कॉर्पोरेशन लिमिटेड भारत सरकार के पात्र उपक्रमों/एजेंसियों से समग्र भर्ती सेवाएँ प्रदान करने हेतु रुचि की अभिव्यक्ति (ईओआई) आमंत्रित करता है। इच्छुक एजेंसियों के पास सरकारी विभागों, केंद्र/राज्य सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, स्वायत्त निकायों, वैधानिक निकायों तथा अन्य सरकारी संगठनों को ऐसी सेवाएँ प्रदान करने का सिद्ध अनुभव होना चाहिए। विस्तृत ईओआई दस्तावेज एसीएल की वेबसाइट **www.antrix.co.in** पर उपलब्ध है। इच्छुक एजेंसियाँ निर्धारित प्रारूप में नियत समय सीमा के भीतर अपनी रुचि की अभिव्यक्ति प्रस्तुत कर सकती हैं।

CBC 49118/11/0001/2627

अंतरिक्ष में भारत की निजी शक्ति एवं वैज्ञानिक सामर्थ्य की उड़ान

ललित गर्ग

आवश्यकता है कि वैज्ञानिक जिज्ञासा को उद्यमिता से, सरकारी नीति को निजी ऊर्जा से और भारतीय प्रतिभा को वैश्विक अवसरों से जोड़ा जाए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का अंतरिक्ष विजन इसी समन्वय को दिशा देता है। भारत ने धरती से चंद्रमा तक अपनी क्षमता सिद्ध कर दी है, अब चुनौती है कि वह अंतरिक्ष में अपनी वैज्ञानिक शक्ति के साथ-साथ आर्थिक, तकनीकी और मानवीय नेतृत्व की भी ऐसी छाप छोड़े, जिसे दुनिया लंबे समय तक याद रखे। यही नई अंतरिक्ष उड़ान आत्मनिर्भर भारत को विकसित भारत की व्यापक आकांक्षा से जोड़ने वाली एक महत्वपूर्ण कड़ी बन सकती है।

भारत की अंतरिक्ष यात्रा अब केवल सरकारी संस्थानों और वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं रह गई है। यह यात्रा आज नवाचार, उद्यमिता, युवा प्रतिभा, निजी पूंजी और वैश्विक महत्वाकांक्षा के ऐसे संगम में बदल रही है, जिसने भारत को अंतरिक्ष महाशक्ति बनने की दिशा में एक नई गति प्रदान की है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में अंतरिक्ष क्षेत्र में निजी सहभागिता के द्वार खोलने का निर्णय इसी परिवर्तन का निर्णायक पड़ाव है। कभी जिस अंतरिक्ष क्षेत्र को लगभग पूरी तरह सरकारी नियंत्रण और संस्थागत सीमाओं के भीतर देखा जाता था, आज वहां सैकड़ों नवोदित उद्यम अपने सपनों, तकनीक और साहस के साथ नई संभावनाओं का आकाश तलाश रहे हैं। प्रधानमंत्री द्वारा भारतीय निजी अंतरिक्ष उद्यमियों से संवाद कर उन्हें प्रेरित करना केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि भविष्य के भारत की दिशा का उद्घोष है। इसमें उन्होंने जिस आत्मविश्वास के साथ भारत को विश्व की अंतरिक्ष प्रतिभा, निवेश और उद्यमिता का आकर्षण-केंद्र बनाने का सपना प्रस्तुत किया, वह भारत की बदलती वैश्विक भूमिका का भी संकेत है। भारत की अंतरिक्ष उपलब्धियों का इतिहास अपने आप में असाधारण है। सीमित संसाधनों के बीच भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने जिस वैज्ञानिक अनुशासन, आत्मनिर्भरता और संकल्प का परिचय दिया, उसने दुनिया को चकित किया है। आर्यभट्ट से प्रारंभ हुई यात्रा मंगलयान तक पहुंची, चंद्रयान ने चंद्रमा के रहस्यों को समझने की भारतीय क्षमता सिद्ध की और चंद्रयान-3 ने भारत को चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र में सफलतापूर्वक उतरने वाला पहला देश बनाकर इतिहास रचा। यह उपलब्धि केवल एक वैज्ञानिक सफलता नहीं थी, यह भारतीय प्रतिभा, तकनीकी आत्मविश्वास और असंभव को संभव करने की राष्ट्रीय क्षमता का प्रमाण थी। मंगलयान ने कम लागत में अंतरग्रहीय अभियान की सफलता से दुनिया को भारत की वैज्ञानिक दक्षता का परिचय दिया। आदित्य-एल1 ने सूर्य के अध्ययन की दिशा में भारत की महत्वाकांक्षा को नई ऊंचाई दी। अंतरिक्ष में मानव उपस्थिति की तैयारी से जुड़ा गगनयान अभियान भारत की अगली बड़ी छलांग का संकेत है। इस पूरी यात्रा ने यह स्पष्ट किया है कि भारत अब अंतरिक्ष विज्ञान मंद केवल उपलब्धियों का अनुकरण करने वाला देश नहीं, बल्कि नए मानदंड स्थापित करने की क्षमता रखने वाला राष्ट्र है।

इस उपलब्धि की अगली स्वाभाविक कड़ी निजी क्षेत्र की भागीदारी है। अंतरिक्ष क्षेत्र में सुधारों के बाद भारत में लगभग 440 अंतरिक्ष-प्रौद्योगिकी नवोदित उद्यमों का उभरना इस परिवर्तन की गहराई को दशार्ता है। इनमें कुछ उपग्रह निर्माण में लगे हैं, कुछ प्रक्षेपण यानों की तकनीक विकसित कर रहे हैं, कुछ अंतरिक्ष आधारित आंकड़ों के विश्लेषण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, पृथ्वी अवलोकन, संचार, मौसम पूवार्नुमान और अंतरिक्ष मलबे के प्रबंधन जैसी अत्याधुनिक दिशाओं में काम कर रहे हैं। स्काईरूट एयरोस्पेस ने निजी क्षेत्र के रॉकेट प्रक्षेपण की दिशा में ऐतिहासिक कदम उठाया है, जबकि अग्निकुल कॉसमॉस ने स्वदेशी तकनीक और आधुनिक निर्माण पद्धतियों के माध्यम से यह दिखाया है कि भारतीय निजी उद्यम अंतरिक्ष प्रक्षेपण के कठिन क्षेत्र में भी अपनी जगह बना सकते हैं। ये प्रयास उस मानसिकता को बदल रहे हैं जिसमें अंतरिक्ष केवल वैज्ञानिक प्रतिष्ठानों का क्षेत्र माना जाता था। अब यह युवा उद्यमियों के लिए रोजगार, अनुसंधान, निवेश और वैश्विक व्यापार का नया क्षेत्र बन रहा है। इस परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि अंतरिक्ष अब केवल आकाश में उपलब्धियों का विषय नहीं, बल्कि धरती पर जीवन को बेहतर बनाने का साधन भी बन रहा है। उपग्रह आधारित सेवाएं कृषि की उत्पादकता बढ़ाने, फसल की निगरानी करने, जल संसाधनों की पहचान, मौसम की सटीक जानकारी देने, मछली पालन, वन संरक्षण और आपदा प्रबंधन में उपयोगी हो सकती हैं। बाढ़, चक्रवात, सूखा और भूस्खलन जैसी प्राकृतिक आपदाओं के समय अंतरिक्ष से प्राप्त सूचनाएं राहत और बचाव कार्यों को अधिक प्रभावी बना सकती हैं। गांवों और दूरदराज के क्षेत्रों में संचार तथा डिजिटल सेवाओं के विस्तार में भी अंतरिक्ष तकनीक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इसलिए भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम अब केवल वैज्ञानिक गौरव का विषय नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन और आर्थिक विकास का शक्तिशाली माध्यम बन रहा है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का अंतरिक्ष संबंधी दृष्टिकोण इसी व्यापक सोच पर आधारित दिखाई देता है। उनका सपना भारत को केवल अंतरिक्ष में पहुंचने वाला देश बनाना नहीं, बल्कि अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में अग्रणी शक्ति बनाना है। वे चाहते हैं कि दुनिया की प्रतिभाएं भारत आएं, भारतीय युवा अंतरिक्ष क्षेत्र में नए विचारों के साथ आगे बढ़ें और भारत वैश्विक अंतरिक्ष कंपनियों तथा निवेशकों के लिए विश्वसनीय केंद्र बने। यह दृष्टिकोण भारत की आर्थिक शक्ति को नई दिशा दे सकता है। अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था आने वाले वर्षों में संचार, मौसम, रक्षा, कृषि, परिवहन, ऊर्जा, आपदा प्रबंधन और डिजिटल सेवाओं के साथ गहराई से जुड़ने वाली है। ऐसे में जो देश इस क्षेत्र में तकनीकी नेतृत्व स्थापित करेगा, उसकी आर्थिक और रणनीतिक शक्ति भी बढ़ेगी। निजी अंतरिक्ष उद्यमों के सामने संभावनाएं जितनी बड़ी हैं, चुनौतियां भी उतनी ही गंभीर हैं। अंतरिक्ष तकनीक में अनुसंधान और विकास के लिए भारी पूंजी चाहिए। प्रक्षेपण की असफलता का जोखिम सामान्य उद्योगों की तुलना में कहीं अधिक होता है। अत्यंत जटिल तकनीक, कठोर सुरक्षा मानक, कुशल मानव संसाधन और दीर्घकालिक निवेश की आवश्यकता इस क्षेत्र को कठिन बनाती है। इसलिए सरकार की भूमिका केवल नियम बनाने तक सीमित नहीं रह सकती। उसे ऐसी नीतियां बनानी होंगी जो नवाचार को प्रोत्साहित करें, निजी उद्यमों को परीक्षण सुविधाएं उपलब्ध कराएं, अनुसंधान संस्थानों और उद्योगों के बीच सहयोग बढ़ाएं तथा निवेशकों का विश्वास कायम रखें। अंतरिक्ष क्षेत्र की एकल खिड़की व्यवस्था और भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्धन एवं प्राधिकरण केंद्र जैसी संस्थागत व्यवस्थाएं इस दिशा में महत्वपूर्ण आधार तैयार कर रही हैं।

भारत के लिए एक और बड़ी संभावना अंतरिक्ष में लागत और दक्षता की अपनी पारंपरिक ताकत को वैश्विक बाजार से जोड़ना है। भारत ने पहले ही यह सिद्ध किया है कि सीमित लागत में उच्च गुणवत्ता वाली अंतरिक्ष सेवाएं प्रदान की जा सकती हैं। यदि यही क्षमता निजी क्षेत्र की गति, नवाचार और जोखिम उठाने की प्रवृत्ति से जुड़ती है तो भारत छोटे उपग्रहों के प्रक्षेपण, उपग्रह निर्माण, अंतरिक्ष आधारित आंकड़ों और वैश्विक अंतरिक्ष सेवाओं के क्षेत्र में बड़ा बाजार हासिल कर सकता है। इससे विदेशी मुद्रा अर्जन के साथ-साथ उच्च कौशल वाले रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे। यहां भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन का अनुभव निजी क्षेत्र के लिए अमूल्य पूंजी है। दशकों की वैज्ञानिक साधना से अर्जित ज्ञान, प्रक्षेपण तकनीक, उपग्रह निर्माण की क्षमता और मिशन प्रबंधन का अनुभव अब देश के नवोदित उद्यमों के लिए मार्गदर्शक शक्ति बन सकता है। सरकारी संस्थान और निजी उद्यम यदि प्रतिस्पर्धा के साथ सहयोग की संस्कृति विकसित करें तो भारत की अंतरिक्ष शक्ति कई गुना बढ़ सकती है। सरकार का काम रास्ता खोलना है, वैज्ञानिक संस्थानों का काम ज्ञान और अनुभव उपलब्ध कराना है और निजी क्षेत्र का काम गति, नवाचार और बाजार की शक्ति को आगे बढ़ाना है। इन तीनों का समन्वय भारत को नई ऊंचाई दे सकता है।

प्रधानमंत्री मोदी का यह आह्वान कि भारत ऐसा वातावरण बनाए जहां दुनिया भर के युवा अंतरिक्ष क्षेत्र में अपना भविष्य बनाने के लिए यहां आने की सोचें, वास्तव में प्रतिभा की वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भारत की नई आकांक्षा को व्यक्त करता है। यह केवल रॉकेटों की संख्या बढ़ाने का लक्ष्य नहीं है, यह भारत को अंतरिक्ष आधारित ज्ञान, तकनीक और अर्थव्यवस्था का केंद्र बनाने की कल्पना है। आने वाले समय में अंतरिक्ष में भारत की सफलता का मूल्यांकन केवल कितने उपग्रह भेजे गए या कितने रॉकेट छोड़े गए, इससे नहीं होगा। असली कसौटी यह होगी कि अंतरिक्ष तकनीक ने भारतीय किसान, विद्यार्थी, उद्यमी, सैनिक, वैज्ञानिक और सामान्य नागरिक के जीवन को कितना बेहतर बनाया। भारत की अंतरिक्ष यात्रा अब उस मुकाम पर है जहां आकाश सीमा नहीं, बल्कि अवसर है। चंद्रयान-3 की चंद्र विजय से लेकर सूर्य की ओर आदित्य-एल1 की यात्रा, मंगलयान की ऐतिहासिक सफलता से लेकर मानव को अंतरिक्ष में भेजने की तैयारी और सरकारी संस्थानों से निकलकर निजी स्टार्टअप के प्रक्षेपण तक भारत ने लंबी दूरी तय की है। अब अगला अध्याय और अधिक महत्वाकांक्षी होना चाहिए। आवश्यकता है कि वैज्ञानिक जिज्ञासा को उद्यमिता से, सरकारी नीति को निजी ऊर्जा से और भारतीय प्रतिभा को वैश्विक अवसरों से जोड़ा जाए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का अंतरिक्ष विजन इसी समन्वय को दिशा देता है। भारत ने धरती से चंद्रमा तक अपनी क्षमता सिद्ध कर दी है, अब चुनौती है कि वह अंतरिक्ष में अपनी वैज्ञानिक शक्ति के साथ-साथ आर्थिक, तकनीकी और मानवीय नेतृत्व की भी ऐसी छाप छोड़े, जिसे दुनिया लंबे समय तक याद रखे। यही नई अंतरिक्ष उड़ान आत्मनिर्भर भारत को विकसित भारत की व्यापक आकांक्षा से जोड़ने वाली एक महत्वपूर्ण कड़ी बन सकती है।

संपादकीय

बीमार हैं स्कूल

देश के सरकारी स्कूलों की बदहाली किसी से छिपी नहीं है। जिस देश में एक लाख स्कूल एक ही शिक्षक के भरोसे चल रहे हों, मूलभूत शैक्षिक सुविधाओं का अभाव हो, वहां पढ़ाई का स्तर क्या होगा, अंदाज लगाना कठिन नहीं है। कुछ स्कूल जर्जर इमारतों में चल रहे हैं, कुछ पेड़ तले व बरामदों में- तो सवाल स्वाभाविक है कि सुधार क्यों नहीं होता? आखिर इन स्कूलों का सुधार हमारे नीति-नियंताओं की प्राथमिकताओं में क्यों नहीं होता? जिस शिक्षा विभाग में अधिकारियों व कर्मचारियों की पूरी फौज तैनात है, उसकी जवाबदेही तय क्यों नहीं होती? अब भले ही सरकारी स्कूलों को सीजेपी ने अपना मुद्दा बना लिया हो, लेकिन इससे पहले ही देश के कई भागों में छात्र स्कूलों में सुधार की मांग को लेकर सड़कों पर उतरे हैं। विडंबना यह है कि इन स्कूलों पर ग्रामीण, समाज के वंचित वर्गों, श्रमिकों व गरीब बच्चों की निर्भरता अधिक होती है, फलतः उनकी आवाज भी अनसुनी कर दी जाती है। यदि नेताओं और अधिकारियों के बच्चों के लिये सरकारी स्कूलों में भर्ती अनिवार्य कर दी जाती तो शायद इन स्कूलों के दिन फिर जाते। सरकारी स्कूलों का सच किसी से छिपा नहीं है। नीति आयोग के हालिया आंकड़े इस सच को अनावृत करते हैं। आयोग के आंकड़ों के मुताबिक पिछले एक दशक में पूरे देश में 94 हजार सरकारी स्कूल बंद हुए हैं। साथ ही इसी अवधि में सरकारी अनुदान प्राप्त स्कूल भी 83 हजार से घटकर 79 हजार रह गये हैं। स्कूलों में छात्रों के दाखिले में कमी का सिलसिला भी बदस्तूर जारी है। लेकिन वहीं दूसरी ओर मुनाफा कमा रहे निजी स्कूलों का कुनबा लगातार बढ़ ही रहा है। उनकी संख्या अब 2.9 लाख से बढ़कर 3.4 लाख के करीब हो गई है। यह एक हकीकत है कि सरकारी स्कूलों की स्थिति को लेकर राजनीतिक दलों की जो फिक्र सामने आ रही है, उसके निहितार्थ समझना कठिन नहीं है। इन दलों की सरकारों के दौरान भी इन स्कूलों की दिशा-दशा में कोई बड़ा बदलाव नजर नहीं आया।

चिंता इस बात को लेकर है कि इस मुद्दे पर जो राजनीति हो रही है, कहीं उसके चलते सुधार के विमर्श पर आंच न आए। सही मायने में सरकारी स्कूलों का कायाकल्प होना चाहिए। इसमें शासन, प्रशासन, पक्ष-विपक्ष और नागरिकों की भी अहम भूमिका होनी चाहिए। नीति-नियंताओं को सोचना चाहिए कि अभिभावकों से मोटी फीस लेने वाले निजी स्कूल क्यों फल-फूल रहे हैं? सरकारी स्कूलों के पास भवन हैं, पर्याप्त जगह है, सम्मानजनक पगार वाले शिक्षक हैं और सरकारी तंत्र का समर्थन है, तो ये स्कूल पनप क्यों नहीं रहे हैं? क्यों सरकारी स्कूलों में पानी, बिजली, बेंच, टेबल व शौचालय जैसी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध नहीं कराई जा रही हैं? बल्कि सुधारों के बजाय शिक्षकों की नियुक्ति में राजनेताओं की धांधली की खबरें अकसर मीडिया में तैरती रहती हैं। विडंबना देखिये कि पढ़ाई-लिखाई के लिये अनुकूल वातावरण की मांग को लेकर राजस्थान व उत्तर प्रदेश के कई शहरों में विद्यार्थी सड़कों पर उतरे हैं। इन बच्चों को अपने भविष्य की फिक्र थी और ये स्कूलों में गुणवत्ता का शैक्षिक वातावरण मांग रहे थे। निश्चित रूप से हमारे नीति-नियंताओं ने सरकारी स्कूलों का उद्धार करने के लिये कभी कोई बड़ा अभियान नहीं चलाया। अब जब मुद्दा तूल पकड़ रहा है तो तमाम घोषणाएं की जा रही हैं। सही मायने में प्राथमिक शिक्षा किसी भी देश के भविष्य की बुनियाद होती है। जब इन स्कूलों में बीमार भविष्य वाले नागरिक तैयार करेंगे तो देश का भला कैसे होगा? दरअसल, सरकारी स्कूल हमारे समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता का पर्याय हैं। जो लोग अपने बच्चों को महंगे सरकारी स्कूलों में नहीं पढ़ा सकते हैं, वे ही अपने बच्चों को सरकारी स्कूलों में भेजने के लिये मजबूर हैं। लेकिन सोचने वाली बात यह कि मिड-डे-मील जैसे प्रलोभनों से ये सरकारी स्कूल कब तक अपना अस्तित्व बना पाएंगे? कहीं न कहीं इन स्कूलों की अनदेखी करके हम एक बड़ी आबादी को शिक्षा के मौलिक अधिकार से वंचित तो नहीं कर रहे हैं?

भूत को छोड़ो, वर्तमान और भविष्य की चिंता करो

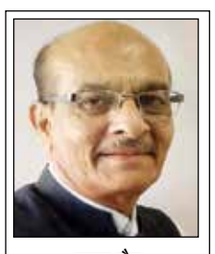

सनत जैन

भारत की राजनीति पिछले तीन दशकों से लगातार भूतों के सहारे चल रही है। कभी बोफोर्स, कभी 2जी, कभी कोयला घोटाला, कभी राम मंदिर, कभी स्वतंत्रता आंदोलन, कभी नेहरू-गांधी परिवार, कभी भारत-पाकिस्तान विभाजन और अब दशकों पुराने घटनाक्रमों की फाइलें खोलकर राजनीति को वर्तमान से हटाकर अतीत में धकेला जा रहा है। सवाल यह है, क्या भूतों को बार-बार कब्र से निकालने से देश का भविष्य बनेगा? बोफोर्स का मामला दशकों तक राजनीतिक हथियार बना रहा। जांच हुई, अरबों रुपए खर्च हुए, देश-विदेश में यात्राएं हुईं, राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप चलते रहे। अंततः फाइल बंद करना पड़ी, क्योंकि कोई भी सबूत नहीं मिला। हां राजनीति से गांधी परिवार जरूर बाहर हो गया। 1989 से लेकर 2026 तक गांधी परिवार का कोई भी सदस्य सरकार के किसी पद पर नहीं रहा। यह सत्य है। इसी तरह मनमोहन सिंह सरकार के समय लगाए गए कई बड़े घोटालों के आरोप, जांच और न्यायिक प्रक्रिया में अलग-अलग रूप में सामने आए। 2जी और कोयला आवंटन इसके उदाहरण हैं। कैग के तत्कालीन सर्वेसर्वा विनोद राय ने कथनी और करनी को लेकर क्षमा भी मांग ली। साजिश एवं राजनीति की इन घटनाओं से सबक लेने के बजाय उन्हें सत्ता तक पहुंचाने के लिए सीढ़ी बना लेने से आज देश स्वतंत्रता के समय की स्थिति में पहुंचने जा रहा है।

2012 के बाद तो जैसे अतीत ही राजनीति का सबसे बड़ा हथियार बन गया है। सवाल यह नहीं है, आज रोजगार कहां है, शिक्षा कैसी है, स्वास्थ्य व्यवस्था क्यों कमजोर है, किसानों की आय और युवाओं का भविष्य क्या होगा। करोड़ों डिग्रीधारी और असंगठित क्षेत्र के युवा बेरोजगार हैं। लाखों स्कूल बंद हो गए हैं। अनपढ़ों की जमात बढ़ती जा रही है। 35, 50 या 75 साल पहले किसने क्या गलती की थी? इस पर राजनीति हो रही है। ऐसी स्थिति में वर्तमान और भविष्य कैसे सुधरेगा? 1998 का जम्मू-कश्मीर वंधामा नरसंहार की जांच फिर से शुरू करने की चर्चा सामने आ रही है। उस घटना में 23 लोगों की हत्या हुई थी, जिनमें महिलाएं और बच्चे भी थे। अपराधियों को सजा और पीड़ितों को न्याय पहले भी दिया जा चुका है। सवाल यह है, न्याय और राजनीति के बीच की सीमा कौन तय करेगा? जो पहले हुआ है, वह सही है, या गलत है। सत्ता की लड़ाई में पुराने जख्मों को भरने के बजाय उन्हें कुरेदकर कश्मीरी पंडित बनाम मुसलमान के बीच एक नई खाई तैयार की जा रही है? भूत को न्याय देना, भूत के सहारे राजनीति करना यह दो अलग बातें हैं। जीवन का सबसे बड़ा सत्य यही है, जो चला गया, वह वापस नहीं आता। मृत्यु के बाद जीवन रुकता नहीं है। परिवार को आगे बढ़ना पड़ता है। बच्चों को भोजन चाहिए, शिक्षा चाहिए, रोजगार चाहिए। इसलिए मृत शरीर को सम्मानपूर्वक अंतिम संस्कार के रूप में विदा करके हम उसे भूलते हैं। यह कहने में कठोर लग सकता है, लेकिन यही जीवन का सत्य है। राष्ट्र भी इसी नियम से चलता है। भारत मे कब तक कब्रें खोद-खोदकर हम भूतों को निकालते रहेंगे?

आज देश में राज्य सरकार, केंद्र सरकार, स्थानीय प्रशासन और आम आदमी कर्ज बढ़ने से हैरान और परेशान है। 20 करोड़ लोगों के पास कोई काम नहीं है। रोजगार की चुनौती, कमजोर होती सार्वजनिक व्यवस्थाओं, बंद होते स्कूलों, महंगी शिक्षा, चिकित्सा और 80 करोड़ लोगों को 5 किलो अनाज, तथा सरकारी सहायता पर निर्भरता बुनियादी सवाल हैं। सामाजिक व्यवस्था धर्म और जाति के संघर्षों में उलझती जा रही है। देश की राजनीति बार-बार अतीत में लौट जाती है। जनरेशन-जी और जनरेशन-अल्फा इस राजनीति को अलग नजर से देख रही है। यह पीढ़ी मोबाइल, इंटरनेट और डिजिटल दुनिया के बीच पैदा होकर बड़ी हुई है। उसके लिए 50 साल पहले क्या हुआ, यह इतिहास है, उसके लिए आज नौकरी मिलेगी या नहीं, शिक्षा कैसी होगी, तकनीक उसके जीवन को कैसे बदलेगी, भविष्य सुरक्षित होगा या नहीं,यह उसकी वास्तविक चिंता है। नई पीढ़ी अपने मां-बाप से कह रही है, आपने जो किया, वह इतिहास बन गया है। हमारी आज की जरूरतें पूरी करें। यदि आप हमारी जरूरत पूरी नहीं कर सकते हैं, तो अपना भविष्य हम स्वयं बनाएंगे। यह संदेश सत्ता और व्यवस्था में बैठे लोगों को समझना होगा।

न्यायपालिका को भी समझना होगा। भारतीय संविधान ने मौलिक अधिकारों के साथ नागरिक अधिकार पैदा किए हैं। ध्यान रखना होगा, भूख और बेरोजगारी का कोई धर्म नहीं होता है। खाली पेट की भीड़ को धर्म एवं इतिहास नहीं, रोटी पानी की जरूरत होती है। बेरोजगार युवा को पुरानी लड़ाइयां नहीं, वर्तमान में रोजगार और नौकरी चाहिए। बीमार व्यक्ति को भाषण नहीं, चिकित्सा के लिए अस्पताल चाहिए। विद्यार्थी को अतीत की बहस नहीं, अच्छी शिक्षा के अवसर चाहिए। सत्ता में बने रहने के लिए यदि हर बार नया भूत निकाला जाएगा। एक दिन वर्तमान सत्ता इतनी कमजोर हो जाएगी। भविष्य के लिए उसके पास कुछ नही बचेगा। सबसे बड़ा खतरा यही है। भूतों के साथ रहते-रहते भूत न बन जाएं। भारत की राजनीति को अब भूत से निकालकर वर्तमान और भविष्य के लिए प्रयोग शालाओं, स्कूलों, अस्पतालों, उद्योगों और रोजगार तकनीकी और शोध के मैदान में सारी दुनिया के साथ प्रतिस्पर्धा के लिए मैदान में आना होगा। अतीत से सीखना जरूरी होता है, अतीत में रहना आत्मघाती होता है। समय गतिशील है, वर्तमान और भविष्य भी इस गतिशीलता से बदलता है। अतीत मे अटक कर वर्तमान और भविष्य को खो देते हैं। भूतों को इतिहास के पन्नों में रहने दीजिए, वर्तमान को बचाइए। भविष्य का निर्माण वर्तमान से जुड़ने पर होगा। यही वर्तमान भारत की सबसे बड़ी जरूरत है।

मदर टेरेसाः गरीबों की सांसों में बसने वाली संत

योगेश कुमार गोयल

मदर टेरेसा का नाम सुनते ही मानवता, करुणा और सेवा का पवित्र स्वरूप आंखों के सामने उभर आता है। उनका जीवन इस तथ्य का सबसे बड़ा प्रमाण है कि निस्वार्थ भाव से दूसरों के दुःख को दूर करने का संकल्प ही मनुष्य को वास्तविक अर्थों में महान बनाता है। 26 अगस्त 1910 को अल्बानिया के स्कोप्जे में एगनेस गोंझा बोयाज्यू के रूप में जन्मी इस नन्हीं बालिका ने बचपन से ही धर्म और सेवा के प्रति गहरी आस्था प्रकट की थी। जब वे केवल 12 वर्ष की थी, तभी उनके भीतर यह संकल्प जाग उठा था कि उनका जीवन केवल दूसरों की भलाई के लिए समर्पित होगा। यही संकल्प आगे चलकर उन्हें पूरी मानवता के लिए करुणा की मूर्ति बना गया।

18 वर्ष की आयु में उन्होंने 'सिस्टर्स ऑफ लोरेटो' से जुड़कर धार्मिक जीवन की ओर कदम बढ़ाए और 1929 में भारत आईं। कलकत्ता स्थित सेंट मैरी स्कूल में उन्होंने अध्यापिका के रूप में कार्य करना शुरू किया। अध्यापन कार्य के दौरान वे छात्रों को केवल पढ़ाई ही नहीं, अनुशासन और नैतिक मूल्यों का भी पाठ पढ़ाती थी किंतु धीरे-धीरे उनका मन स्कूल की चारदीवारी से बाहर रहने वाले निर्धन, रोगग्रस्त और बेसहारा लोगों की ओर अधिक खिंचने लगा। 1946 में दार्जिलिंग की यात्रा के दौरान उन्हें अपने जीवन का वास्तविक ध्येय मिला। उन्होंने महसूस किया कि उन्हें शिक्षण कार्य से ऊपर उठकर गरीबों और असहायों की सीधी सेवा करनी चाहिए। यह क्षण उनके जीवन की दिशा बदल देने वाला साबित हुआ।

कलकत्ता की झुग्गियों और गलियों में रहने वाले लोगों की असहनीय पीड़ा को देखकर उन्होंने 1950 में 'मिशनरीज ऑफ चैरिटी' की स्थापना की। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य था सबसे गरीब, सबसे लाचार और सबसे उपेक्षित लोगों की निःस्वार्थ सेवा करना। संस्था का ध्येय वाक्य ही था, 'सबसे गरीबों में भी सबसे गरीब की सेवा।' मदर टेरेसा ने सेवा की परिभाषा केवल भोजन और दवा देने तक सीमित नहीं रखी बल्कि उनके लिए सेवा का अर्थ था पीड़ित व्यक्ति को यह अनुभव कराना कि वह अकेला नहीं है, उसे प्यार और सम्मान मिला हुआ है। यही कारण था कि वे सदैव कहा करती थी, 'हम बड़े-बड़े कार्य नहीं कर सकते लेकिन हम छोटे-छोटे कार्य बड़े प्रेम से कर सकते हैं।'

उनके आश्रमों में केवल भोजन या उपचार की सुविधा ही नहीं दी जाती थी बल्कि वहां पीड़ित व्यक्तियों को जीवन की गरिमा और आत्मसम्मान भी लौटाया जाता था। उन्होंने कुष्ठ रोगियों को समाज में सम्मान दिलाने के लिए आश्रम बनाए, अनाथ और परित्यक्त बच्चों के लिए घर खोले और मृत्युशैया पर पड़े लोगों को अंतिम क्षणों में भी प्रेम और स्नेह का अहसास कराया। उनकी संस्था धीरे-धीरे भारत ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में फैल गई, जिसके सैंकड़ों केंद्र आज विभिन्न देशों में मानव सेवा का कार्य कर रहे हैं। मदर टेरेसा की असाधारण सेवाओं को देखते हुए उन्हें अनेक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। 1962 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से अलंकृत किया और 1980 में 'भारत रत्न' प्रदान कर सर्वोच्च नागरिक सम्मान दिया। विश्व स्तर पर उन्हें 1979 में नोबेल शांति पुरस्कार दिया गया। इसके अतिरिक्त अनेक देशों ने उन्हें अपने सर्वोच्च सम्मानों से विभूषित किया किंतु इन सब पुरस्कारों और मान-सम्मानों के बीच भी वे सदैव विनम्र बनी रही और स्वयं को केवल ईश्वर का साधन मानती रही।

उनके जीवन और कार्यों की इतनी ऊंचाई होने के बावजूद वे आलोचनाओं से अछूती नहीं रही। कई बार उन पर धर्मांतरण के आरोप लगाए गए तो कई बार उनके आश्रमों में आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं की कमी की बात उठाई गई किंतु यह निर्विवाद सत्य है कि मदर टेरेसा ने लाखों असहायों को आशा, सहारा और जीवन का सम्मान प्रदान किया। उनके कार्यों का व्यापक प्रभाव इसी से समझा जा सकता है कि वे समाज की उस परत तक पहुंची, जिसे प्रायः शासन और व्यवस्था भी अनदेखा कर देती थी। 5 सितंबर 1997 को 87 वर्ष की आयु में जब उनका निधन हुआ, तब समूचे विश्व ने उन्हें खोने का दुःख अनुभव किया। उनके अंतिम संस्कार में दुनिया के अनेक देशों के नेता उपस्थित हुए और भारत ने उन्हें राजकीय सम्मान के साथ विदाई दी। उनकी मृत्यु के बाद भी उनकी संस्था 'मिशनरीज ऑफ चैरिटी' उसी निष्ठा से मानवता की सेवा में कार्यरत है। 2016 में पोप फ्रांसिस ने उन्हें संत की उपाधि प्रदान की, जिससे उनका जीवन एक वैश्विक आध्यात्मिक प्रेरणा का प्रतीक बन गया। मदर टेरेसा का जीवन इस तथ्य को रेखांकित करता है कि वास्तविक महानता किसी पद, संपत्ति या शक्ति में नहीं बल्कि निस्वार्थ सेवा और करुणा में निहित है। उन्होंने यह साबित किया कि जब तक हम दूसरों के दुःख को अपना नहीं मानते, तब तक जीवन का सही अर्थ अधूरा रहता है। आज जब दुनिया हिंसा, असमानता और स्वार्थ की चपेट में है, तब मदर टेरेसा का संदेश पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो उठता है। उन्होंने सिखाया कि प्रेम और करुणा ही वह शक्ति है, जो मानवता को जोड़ सकती है। उन्होंने धर्म, जाति और भाषा की सीमाओं से परे जाकर यह बताया कि इंसानियत ही सबसे बड़ा धर्म है। यही उनकी सबसे बड़ी विरासत है, जिसे आगे बढ़ाना हर व्यक्ति का कर्त्तव्य है। मदर टेरेसा की जयंती का अवसर केवल स्मरण का नहीं बल्कि आत्ममंथन का अवसर है, जो हमें यह सोचने पर विवश करता है कि हम अपने जीवन में कितना समय और कितनी संवेदनशीलता समाज के जरूरतमंदों के लिए समर्पित करते हैं। यदि हर व्यक्ति अपने आसपास के जरूरतमंदों के लिए थोड़ा-सा भी प्रयास करे तो समाज में फैली असमानता और पीड़ा काफी हद तक कम हो सकती है। मदर टेरेसा का जीवन हमें यही सिखाता है कि सच्चा धर्म केवल मानव सेवा है और सच्ची पूजा केवल करुणा है।

संक्षिप्त समाचार

कैब बुक करते ही आती है स्मार्ट कार, मशीन से कट जाते हैं पैसे: एआई ने कैसे बदली रोजमर्रा की जिंदगी

बीजिंग, एजेंसी। चीन में लोकप्रिय पर्यटन स्थल की सड़कों पर टहलते हुए या दफ्तर से घर लौटते वक्त अथवा शॉपिंग करते समय इन्सान का किसी न किसी एआई डिवाइस से टकराए बिना चलना नामुमकिन हो चुका है। इनमें से कई चीजें वाकई काम की हैं। बूढ़ी होती चीनी आबादी के लिए श्रमिकों की कमी रोबोट पाट रहे हैं, बाजारों में ह्यूमनॉइड का चलन बढ़ चुका है। सड़क पर एक डिवाइस रोड पार करने वाले पैदल यात्रियों को ट्रैक कर पुलिस की मदद कर रही है। सड़क पर गलती की तो डिवाइस आपको पकड़ती है। पर्यटन स्थलों में वेंडिंग मशीन चेहरा पहचान कर वीचैट जैसे डिजिटल वॉलेट से पैसे काटती है। चीनी कंपनियां बीजिंग के इस विजन को हकीकत में बदलने की होड़ में जुट गई हैं। इसी का नतीजा हैं बढ़ते ह्यूमनॉइड्स, स्मार्ट कारें और कई तरह के रोबोट्स। यह सोच अमेरिकी सोच से इसलिए अलग है क्योंकि अमेरिका खास जगहों पर ही इस तरह के रोबोट्स का प्रयोग करता है। ह्यूमनॉइड रोबोट खुद ही ग्रॉसरी स्टोर को खुद रोबोट संभालता है। यहां तक कि आपके कूड़े को भी पहले एआई स्कैन करता है और बताता है कि वह सूखा कचरा है या गीला। उसके बाद आप सही डिब्बा चुनकर कचरा डालते हैं। सबसे बड़ी बात है कि सरकार खुद अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए एआई को सीधे फैक्टरियों, अस्पतालों, स्कूलों और दुकानों में लगाने को प्रेरित कर रही है। जहां अमेरिकी कंपनियां ज्यादातर चैटबॉट्स और सुपरह्यूमन इंटेलिजेंस के अनिश्चित लक्ष्य पर केंद्रित हैं, वहीं चीन सरकार चाहती है कि एआई सीधे फैक्ट्रियों और दुकानों में इस्तेमाल होकर अर्थव्यवस्था को नई ताकत दें।

थाईलैंड के तीन प्रांतों में हिंसा, प्रधानमंत्री अनुतिन ने बुलाई आपात बैठक; क्या है पूरा मामला

बैंकाक, एजेंसी। थाईलैंड के प्रधानमंत्री अनुतिन चार्नविराकुल ने रविवार को वरिष्ठ सुरक्षा अधिकारियों के साथ आपात बैठक की। देश के उत्तर में पहले से ही बाढ़ का संकट बना हुआ है। इसी बीच, दक्षिण के तीन प्रांतों में रातभर एक साथ हिंसा हुई। इन इलाकों में कुछ मुस्लिम विद्रोही संगठन सरकार के खिलाफ लड़ रहे हैं और अपने इलाके के लिए अलग शासन की मांग कर रहे हैं। अनुतिन के उत्तर की ओर रवाना होने से कुछ समय पहले यह बैठक हुई। उन्हें बुरी तरह बाढ़ प्रभावित नान प्रांत का जायजा लेना था। बैठक शनिवार रात दक्षिण के सबसे आखिरी तीन प्रांतों में हुई 51 घटनाओं के बाद बुलाई गई। इनमें नाराथिवाट, पट्टानी और याला शामिल हैं। हमलावरों का सेना या पुलिस से कोई सामना नहीं हुआ। अब तक सिर्फ तीन नागरिकों के घायल होने की जानकारी है। रविवार को बताया गया कि तीनों की हालत में सुधार हो रहा है। हिंसा में मुख्य रूप से छोटे बमों का इस्तेमाल हुआ। आगजनी की गई। संपत्तियों को भी नुकसान पहुंचाया गया। सबसे बड़ा निशाना पट्टानी का 7-इलेवन स्टोर था। सोशल मीडिया पर चल रहे एक वीडियो में हथियारबंद लोग स्टोर के बाहर घूमते दिखे। ग्राहक और कर्मचारी वहां से भागते नजर आए। इसके बाद स्टोर में आग लगा दी गई।

ईरान का दावा; खोज निकाला नया गैस भंडार, 15 साल तक होगी आपूर्ति; तेल मंत्री ने क्या बताया

तेहरान, एजेंसी। ईरान ने दक्षिणी फार्स प्रांत में एक नया गैस क्षेत्र खोजने का दावा किया है। ईरान के तेल मंत्री मोहसिन पाकनेजाद ने यह जानकारी दी। ईरानी समाचार एजेंसी आईआरआईबी के मुताबिक, इस नए गैस क्षेत्र में करीब 7,500 अरब घन फीट गैस होने का अनुमान है। पाकनेजाद ने रविवार को कहा कि 7,500 अरब घन फीट गैस की खोज हुई है। उन्होंने बताया कि 73 प्रतिशत गैस निकाली जा सकती है। इसके हिसाब से करीब 5,700 अरब घन फीट गैस निकालना संभव है। उन्होंने दावा किया कि यह मात्रा दक्षिण पार्स गैस क्षेत्र के एक ब्लॉक के बराबर है और इससे 15 साल तक गैस की आपूर्ति की जा सकती है। पाकनेजाद ने कहा कि नई खोजी गई स्वीट गैस है। इसका मतलब है कि इसमें सल्फर जैसी अशुद्धियां कम होती हैं। इससे गैस क्षेत्र को विकसित करने और संचालित करने की लागत कम करने में मदद मिलेगी। उन्होंने बताया कि इस खोज में गैस कंडेनसेट भी मिला है। यह गैस के साथ निकलने वाला एक तरह का तरल ईंधन होता है। पाकनेजाद ने कहा कि इससे ईरान को अरबों डॉलर की नई संपत्ति मिल सकती है। इस बीच, शनिवार को ईरान के पेट्रोलियम मंत्रालय की समाचार एजेंसी सना ने दक्षिण पार्स गैस क्षेत्र की फेज-14 रिफाइनरी को लेकर जानकारी दी।

ट्रंप के दामाद की डेमोक्रेट नेता से मुलाकात: मध्यावधि चुनाव से पहले बढ़ी हलचल; क्या बदलेगा सियासी समीकरण

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी संसद के निचले सदन प्रतिनिधि सभा में डेमोक्रेटिक नेता हकीम जेफरीज और राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के दामाद व बाहरी सलाहकार जरेड कुशनर ने हाल ही में न्यूयॉर्क में निजी मुलाकात की। यह मुलाकात ऐसे समय हुई है, जब नवंबर के मध्यावधि चुनाव में यह तय होना है कि प्रतिनिधि सभा किसका नियंत्रण होगा। अगर डेमोक्रेट रिपब्लिकन से प्रतिनिधि सभा में बहुमत छीन लेते हैं, तो माना जा रहा है कि व्हाइट हाउस उनके साथ काम करने के रास्ते तलाश सकता है।

मुलाकात में किन मुद्दों पर हुई बात : न्यूयॉर्क टाइम्स ने रविवार को सबसे पहले इस मुलाकात की सूचना दी। बातचीत में आवास, आव्रजन और बढ़ती महंगाई जैसे कई मुद्दे शामिल रहे। अमेरिका में लोग बढ़ती कीमतों से परेशान हैं। डेमोक्रेट इसके लिए ट्रंप और रिपब्लिकन पार्टी को जिम्मेदार ठहराते हैं। उनका आरोप है कि सरकार महंगाई को काबू करने में नाकाम रही है। कुशनर ने जेफरीज को व्हाइट हाउस की चीफ ऑफ स्टाफ सूसी विल्स से आगे की बातचीत के लिए मिलने का सुझाव दिया। नवंबर में अगर डेमोक्रेट फिर से सत्ता में आते हैं, तो जेफरीज के हाउस स्पीकर बनने की संभावना है। जेफरीज ने रविवार को दिए बयान में इस निजी बातचीत का जिक्र नहीं किया। हालांकि, उन्होंने कहा कि रिपब्लिकन सरकार को अपनी मेरी बात मानो या रास्ता छोड़ो वाली नीति छोड़नी चाहिए। उनके मुताबिक, यह नीति अमेरिकी लोगों के लिए नाकाम रही है। न्यूयॉर्क से सांसद जेफरीज ने कहा कि इस समस्या को रोकने के लिए वे कई बार साफ कर चुके हैं कि सख्ती का तरीका काम नहीं करेगा। उन्होंने कहा कि इसका जोरदार विरोध किया जाएगा। उन्होंने सवाल किया कि क्या रिपब्लिकन भी उनके साथ आएंगे।

बहुमत खोने की चिंता क्यों : इस मुलाकात से इस बात का संकेत मिल रहा है कि रिपब्लिकन पार्टी को कांग्रेस में अपना बहुमत खोने की कितनी चिंता है। खासकर प्रतिनिधि सभा को लेकर चिंता ज्यादा है। व्हाइट हाउस भी राष्ट्रपति पर पड़ने वाले संभावित राजनीतिक असर को रोकने के लिए विपक्षी डेमोक्रेट से संपर्क बढ़ाना चाहता है।

अगर नवंबर के चुनाव में डेमोक्रेट प्रतिनिधि सभा का बहुमत हासिल कर लेते हैं, तो वे सरकार के कामकाज की कड़ी जांच कर सकते हैं। जेफरीज प्रशासन के कुछ लोगों को धोखेबाज कह चुके हैं। ऐसे में डेमोक्रेट के पास महाभियोग चलाने समेत सरकार पर दबाव बनाने के कई विकल्प होंगे।

माइक जॉनसन ने मुलाकात पर क्या कहा : ट्रंप के करीबी सहयोगी और हाउस स्पीकर माइक जॉनसन ने रविवार को इस मुलाकात के बारे में सवाल पूछे जाने पर नाराजगी जताई। उन्होंने कुशनर की भूमिका को कम करके बताया। जॉनसन ने कहा कि कुशनर अपना दांव दोनों तरफ रखते हैं। लुइसियाना से रिपब्लिकन सांसद जॉनसन ने फॉक्स न्यूज चैनल के कार्यक्रम में कहा कि प्रतिनिधि सभा में रिपब्लिकन के खिलाफ दांव लगाना ठीक नहीं होगा। जॉनसन ने कहा कि उन्हें नहीं पता कि यह मुलाकात किस बारे में थी। उन्होंने कहा कि जरेड के कई दूसरे कामों में भी हित हैं। उनके मुताबिक, कुशनर प्रशासन में सीधे तौर पर शामिल नहीं हैं, कम से कम व्हाइट हाउस के रोजमर्रा के काम में नहीं। व्हाइट हाउस ने इस मामले पर अब तक टिप्पणी नहीं की। कुशनर के प्रतिनिधि ने भी कोई जवाब नहीं दिया। कुशनर डेमोक्रेट नेताओं के लिए ट्रंप के पुराने संदेशवाहक रहे हैं। जेफरीज और कुशनर एक-दूसरे के लिए नए नहीं हैं। दोनों न्यूयॉर्क से हैं। ट्रंप के पहले कार्यकाल में दोनों ने एक अहम प्रस्ताव पर साथ काम किया था। इस प्रस्ताव में कुछ नशीली दवाओं से जुड़े अपराधों में सजा तय करने में ज्यादा लचीलापन देने का प्रावधान था। इसका मकसद संघीय जेल व्यवस्था में लंबी सजा को कम करना था।

दोनों के बीच बहुत करीबी संबंध नहीं हैं। इसके बावजूद दोनों ने संपर्क बनाए रखा है। ट्रंप लगातार जेफरीज पर हमला करते रहे हैं और डेमोक्रेटिक नेता भी उन्हें जवाब देते रहे हैं।

ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में कुशनर की बड़ी भूमिका : ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में कुशनर की भूमिका काफी बड़ी है। हालांकि, व्हाइट हाउस में उनके पास कोई आधिकारिक पद नहीं है। वह बाहरी सलाहकार और दूत के तौर पर काम करते हैं। खासकर विदेश में कूटनीतिक मिशनों के लिए वह यात्रा करते रहे हैं। अमेरिका और ईरान का युद्ध छठे महीने में पहुंच चुका है। राष्ट्रपति के दोबारा व्हाइट हाउस लौटने के बाद ट्रंप जेफरीज से अब तक केवल एक बार मिले हैं। उस मुलाकात में ट्रंप ने प्रतिनिधि सभा के नेता जेफरीज और न्यूयॉर्क के सीनेट डेमोक्रेटिक नेता चक शूमर को चिढ़ाया था। उन्होंने ओवल ऑफिस में दोनों के सामने मेज पर लाल रंग की मेक अमेरिका ग्रेट अगेन 2028 टोपी रखी थी।

अधिकृत देशों के होर्मुज से गुजरने वाले जहाजों से शुल्क वसूलेगा ईरान, क्या बताई वजह

तेहरान, एजेंसी। ईरान ने रविवार को कहा कि अधिकृत देशों के जो जहाज होर्मुज जलडमरूमध्य से गुजरेंगे, उन्हें अब तेहरान को सेवा शुल्क देना होगा। ईरान की राष्ट्रीय सुरक्षा आयोग के प्रवक्ता इब्राहिम रेजाई ने इस फैसले की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यह शुल्क समुद्री, पर्यावरण और लॉजिस्टिक से जुड़ी कई तरह की सेवाओं के लिए लिया जाएगा। सरकारी प्रसारक आईआरआईबी के मुताबिक, यह फैसला होर्मुज जलडमरूमध्य की सुरक्षा और प्रगति सुनिश्चित करने के लिए रणनीतिक कार्रवाई योजना के अनुच्छेद 3 को मंजूरी मिलने के बाद लिया गया है। रेजाई ने कहा कि राष्ट्रीय सुरक्षा आयोग ने इस योजना के अनुच्छेद 3 को मंजूरी दे दी है। इसके तहत होर्मुज जलडमरूमध्य से गुजरने की अनुमति पाने वाले देशों के जहाजों को ईरान की ओर से दी जाने वाली सेवाओं का भुगतान करना होगा।

जहाजों से किस वजहों से शुल्क लिया जाएगा : उन्होंने कहा कि इन सेवाओं में जहाजों की आवाजाही के लिए मदद, पर्यावरण से जुड़ी सेवाएं, कुछ परिस्थितियों में ईंधन, बीमा, सुरक्षा और दूसरी सेवाएं शामिल हैं। प्रवक्ता ने बताया कि भुगतान के लिए लचीली वित्तीय व्यवस्था तैयार की गई है। उन्होंने कहा कि शुल्क ईरानी रियाल या इस्लामी गणराज्य ईरान की ओर से पसंद की जाने वाली किसी दूसरी मुद्रा में लिया जा सकता है।

होर्मुज जलडमरूमध्य अब भी बंद है- रेजाई : इससे पहले शनिवार को ईरान की सर्वोच्च राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के सचिव मोहसिन रेजाई ने कहा था कि होर्मुज जलडमरूमध्य अभी भी बंद है। उन्होंने कहा था कि जब तक अमेरिका अपनी जिम्मेदारियां पूरी नहीं करता और अपना रवैया नहीं बदलता, तब तक यह जलमार्ग दोबारा नहीं खोला जाएगा। आईआरआईबी को दिए इंटरव्यू में रेजाई ने कहा कि अमेरिकी दावों के बावजूद होर्मुज जलडमरूमध्य बंद है और अमेरिका का रवैया ठीक होने तक यह नहीं खुलेगा। उन्होंने कहा कि इस बार अमेरिका को पहले अपनी जिम्मेदारियां पूरी करनी होंगी। रेजाई ने यह भी आरोप लगाया कि अमेरिका सैन्य विकल्पों से निराश हो चुका है और अब आर्थिक नाकाबंदी के जरिये ईरान पर दबाव बनाने की कोशिश कर रहा है। उन्होंने दावा किया कि इस्राइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को भरोसा दिलाया है कि आर्थिक नाकाबंदी ईरान को आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर कर देगी। दूसरी ओर, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने फिर होर्मुज जलडमरूमध्य पर अमेरिका के नियंत्रण का दावा किया है। उन्होंने ट्रुथ सोशल पर एक तस्वीर साझा की। इसमें होर्मुज जलडमरूमध्य को न्यू यूएस टेरिटरी यानी नया अमेरिकी क्षेत्र बताया गया है। ट्रंप ने इससे पहले 18 अगस्त को एक पोस्ट साझा की थी।

जापानी कंपनियों की पहली पसंद भारत, फिर भी कारखाने थाईलैंड में ज्यादा; क्या है रणनीति

टोक्यो, एजेंसी। जापान के लिए भारत कागज पर पहली पसंद है, कारखाने के लिए थाईलैंड। जापानी कंपनियों की पसंद में भारत भले 61.8त्न वोट के साथ पसंदीदा ठिकानों की सूची में लगातार चौथे साल शीर्ष पर है, पर जापानी कंपनियां भारत में 1400 हैं जबकि थाईलैंड में छह हजार। 11 साल में निवेश का लक्ष्य 3.5 लाख करोड़ येन (2.10 लाख करोड़ रुपये) से बढ़कर 10 लाख करोड़ येन (6 लाख करोड़ रुपये) हो गया, कंपनियों की गिनती नहीं बढ़ी। रकम के वादे काम नहीं आए, इसलिए इस बार सरकार 220 भारतीय उद्योगपतियों को सीधे जापानी कारखानों के दरवाजे पर ले जा रही है। केंद्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल के नेतृत्व वाला यह दल सोमवार से 27 अगस्त तक जापान में रहेगा। रणनीति दौरे के नक्शे से समझ आती है। पैसा टोक्यो में है, पर कारखाना लगाने वाली कंपनियां वहां नहीं हैं। जापान की असली विनिर्माण ताकत आइची और कंसाई की उन हजारों मझोली कंपनियों में है, जो बड़ी कंपनियों को कलपुर्जे देती हैं। कोई जापानी कंपनी जब कहीं जाती है, तो आपूर्तिकर्ताओं का पूरा झुंड साथ ले जाती है। इसीलिए भारत पहली बार इंतजार के बजाय खुद उनके पास गया है। भारतीय दल नागोया में चुकेइरेन व नागोया चैंबर के साथ रोड शो करेगा, ओसाका व क्योटो में क्षेत्रीय उद्योग से जुड़ेगा।

सेमीकंडक्टर, इलेक्ट्रॉनिक्स व एआई पर गोलमेज बैठक : इस कार्यक्रम में मशीन को समझने या जानने पर जोर है। सेमीकंडक्टर, एआई और इलेक्ट्रॉनिक्स पर एक गोलमेज बैठक है, पूंजीगत वस्तुओं, मशीनरी और वाहन उद्योग पर दूसरी। दौरे का मकसद दोतरफा निवेश बढ़ाना है। इसी क्रम में भारतीय कंपनियों का जापान जाना भी अहम है, जहां अभी सिर्फ 100 भारतीय कंपनियां हैं। दल में रिलायंस के औद्योगिक नगर मेट सिटी के प्रमुख हैं, जो जापानी कंपनियों को जमीन बेचते हैं। मारुति सुजुकी है, गुजरात राज्य उर्वरक एवं रसायन है, बीमा व संपत्ति प्रबंधन कंपनियां हैं, जो जापान की सस्ती पेंशन पूंजी की तलाश में हैं, और स्टार्टअप का पूरा जत्था है।

चांद के दक्षिणी ध्रुव में भारत से पिछड़ा चीन कैसे कर रहा बराबरी की कोशिश, क्या है मिशन, कितना अहम

बीजिंग, एजेंसी। चीन जल्द ही चांद के लिए अपना नया चंद्र मिशन लॉन्च करने वाला है। जानकारी के मुताबिक, अपने चांगई-7 मिशन को चीन सोमवार सुबह से लेकर अगले कुछ दिनों में सही मौका देखकर लॉन्च कर सकता है। चीन का यह मिशन इस लिए भी अहम है, क्योंकि इसके जरिए वह चांद के दक्षिणी ध्रुव पर अपना रोवर उतारना चाहता है, जहां सूरज की रोशनी नहीं पहुंचती। मजेदार बात यह है कि भारत करीब तीन साल पहले ही चांद के इस इलाके में अपने रोवर की सफल लैंडिंग कराने वाला पहला देश बन चुका है। यानी चीन जिस रेस में पहले ही पिछड़ चुका है, अब वहां बराबरी की कोशिश में जुटा है।

ऐसे में यह जानना अहम है कि भारत से पिछड़ने के बावजूद चीन का यह मिशन क्यों अहम है क्यों कई देशों की अपने मिशन को चांद के दक्षिणी ध्रुव पर भेजने की कोशिशें नाकाम हो चुकी हैं अब चीन इस मिशन के जरिए क्या हासिल करना चाहता है भारत फिलहाल दक्षिणी ध्रुव पर रिसर्च के मामले में किस पड़ाव पर है आइये जानते हैं...

चांगई-7 चीन का चांद के लिए तय मानवरहित, रोबोटिक चंद्र मिशन है, जिसे अब तक का सबसे महत्वाकांक्षी और जटिल रोबोटिक मिशन माना जा रहा है। इस मिशन का मुख्य मकसद चांद के दक्षिणी ध्रुव पर मौजूद स्थायी रूप से अंधेरे क्रेटरों (गड्ढों) में बर्फ (पानी) की खोज करना और जमीन पर इनकी मौजूदगी का नक्शा बनाना है। इस मिशन को लॉन्ग मार्च-5 वाई14 रॉकेट के जरिए हेनान प्रांत के वेनचांग स्पेस लॉन्च साइट से प्रक्षेपित किया जाएगा। इसके प्रक्षेपण की संभावित समय-सीमा 24 अगस्त से 31 अगस्त 2026 के बीच की है। यह मिशन चांद के दक्षिणी ध्रुव पर मौजूद शेकलटन क्रेटर के किनारे पर उतरेगा। यह सौर मंडल के सबसे ठंडे स्थानों में से एक है, जहां तापमान -203 डिग्री सेल्सियस तक गिर सकता है। चीन के इस मिशन की खास बात यही है कि मिशन को मुख्यतः चांद की सतह पर पानी की खोज के लिए लॉन्च किया जा रहा है, इसलिए इसमें एक हॉपर भी भेजा जाएगा, जो कि ऐसा समर्पित हॉपर उपयोग करने वाला यह दुनिया का पहला मिशन होगा। अंतरराष्ट्रीय सहयोग- मिशन में विभिन्न देशों और संगठनों के उपकरण भी शामिल हैं। जैसे इटली का लेजर रेट्रोरिफ्लेक्टर, रूस का धूल संसूचक यंत्र, स्विट्जरलैंड का रेडिएशन स्पेक्ट्रोमीटर और हांगकांग विश्वविद्यालय और आईएलओए हुआवे की ओर विकसित एक कॉम्पैक्ट कैमरा आईएलओ-सी शामिल है, जो चंद्रमा की सतह से हमारी आकाशगंगा के गैलेक्टिक प्लेन की तस्वीरें लेगा। भविष्य का रास्ता- यह मिशन चीन के चंद्र अन्वेषण के चौथे चरण का हिस्सा है। यह 2030 तक चंद्रमा पर पहले चीनी मानव लैंडिंग के लिए आधार तैयार कर रहा है।

अमेरिका के जंगल में लगी भीषण आग, हजारों एकड़ इलाका खाक; 42 हजार लोगों को इलाका खाली करने के निर्देश

वॉशिंगटन, एजेंसी। नेवाडा-कैलिफोर्निया बॉर्डर के पास उत्तर-पश्चिमी नेवाडा के शहर रेनो की ओर जंगल की आग तेजी से फैल रही है। अधिकारियों के मुताबिक आग की वजह से कम से कम छह लोग घायल हो गए। अधिकारियों ने बताया कि करीब 42,000 लोगों को इलाका छोड़ने का आदेश दिया गया है। सिन्हुआ समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, यह आग शनिवार को शुरू हुई थी। अग्निशमन अधिकारियों ने रविवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि आग अब तक 13,000 एकड़ से ज्यादा क्षेत्र में फैल चुकी है। आग अभी तक पूरी तरह नियंत्रण से बाहर है।

आग से छह लोग घायल : अधिकारियों ने कहा कि घायलों में तीन आम नागरिक और तीन आपातकालीन सेवा कर्मी शामिल हैं। इसके अलावा, लगभग 45,000 लोग ऐसे क्षेत्र में हैं जहां उन्हें किसी भी समय इलाके को खाली करने की चेतावनी दी जा सकती है। अधिकारियों ने यह भी पुष्टि की कि आग में कई इमारतें और ढांचे नष्ट हो चुके हैं। रविवार को वाशो काउंटी में करीब 10,000 बिजली उपभोक्ता बिना बिजली के थे। रेनो, वाशो काउंटी का मुख्य शहर और सबसे अधिक आबादी वाला इलाका है।

तेज हवाओं ने बढ़ाई परेशानी : अधिकारियों के अनुसार, आग का व्यवहार बेहद खतरनाक और असामान्य देखा गया है। तेज हवाओं के कारण आग सूखी और आसानी से जलने वाली वनस्पतियों में बहुत तेजी से फैल रही है। नेवादा के गवर्नर जो लोम्बार्डो ने शनिवार रात वाशो काउंटी में आपातकाल की घोषणा कर दी। लोम्बार्डो ने एक बयान में कहा, यह स्थिति लगातार बदल रही है और बहुत तेजी से विकसित हो रही है। मैं प्रभावित इलाकों में रहने वाले सभी लोगों से सतर्क रहने और स्थानीय अधिकारियों के निर्देशों का पालन करने की अपील करता हूं। राज्य सरकार पूरी तरह सक्रिय है और हम स्थानीय प्रशासन तथा राहतकर्मियों के साथ मिलकर लोगों की जान बचाने, समुदायों की सुरक्षा करने और नागरिकों को खतरे से दूर रखने के लिए हर संभव संसाधन लगा रहे हैं।

पूर्व पीएम इमरान खान की जांच पर सवाल, पीटीआई ने पूछा- एंजियोग्राफी क्यों नहीं हुई शिफा अस्पताल की मांग दोहराई

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) ने पूर्व प्रधानमंत्री और पार्टी संस्थापक इमरान खान की स्वास्थ्य जांच को लेकर सरकार पर सवाल उठाए हैं। पार्टी ने मांग की है कि इमरान खान की ष्ट्ज्ञ कोरोनरी एंजियोग्राफी शिफा इंटरनेशनल अस्पताल में कराई जाए। पीटीआई ने आरोप लगाया कि पाकिस्तान इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में डॉक्टरों की सलाह के बावजूद यह जांच नहीं कराई गई। पीटीआई के केंद्रीय सूचना सचिव शेख वकास अकरम के मुताबिक, 10 अगस्त को एक सरकारी मेडिकल बोर्ड ने इमरान खान की जांच की थी। इससे पहले के एक हृदय रोग विशेषज्ञ ने 1 अगस्त को उनकी बदलती ब्लड प्रेशर स्थिति, बेचैनी और संभावित हृदय संबंधी जटिलताओं के जोखिम को देखते हुए ष्ट्ज्ञ कोरोनरी एंजियोग्राफी की सलाह दी थी। अकरम ने कहा कि इमरान की उम्र और लंबे समय से अलगाव में रहने को देखते हुए यह जांच जरूरी मानी गई थी। उनका दावा है कि सरकारी डॉक्टरों ने भी इस जांच को चिकित्सकीय रूप से आवश्यक माना था।

पीटीआई नेता के अनुसार, इमरान खान को ले जाने के बाद भी सुझाई गई जांच नहीं की गई। अस्पताल अधिकारियों ने कथित तौर पर कहा कि इसके लिए जरूरी उपकरण उपलब्ध नहीं था। अकरम ने दावा किया कि अस्पताल के रेडियोलॉजी विभाग में ष्ट्ज्ञ स्कैनर मौजूद था और वह इस तरह की जांच करने में सक्षम था। उन्होंने कहा कि इस घटना से इमरान को समय पर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने को लेकर चिंताएं और बढ़ गई हैं। पीटीआई ने शिफा अस्पताल में इलाज की मांग क्यों की पीटीआई का कहना है कि शिफा इंटरनेशनल अस्पताल में जरूरी विशेषज्ञ और चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध हैं। पार्टी ने इमरान खान की ष्ट्ज्ञ कोरोनरी एंजियोग्राफी इसी अस्पताल में स्वतंत्र विशेषज्ञों और उनके निजी डॉक्टरों की निगरानी में कराने की मांग की है। पार्टी ने इमरान के परिवार, निजी मेडिकल टीम और कानूनी सलाहकारों को उनके सभी मेडिकल रिकॉर्ड, रिपोर्ट और जांच के नतीजे उपलब्ध कराने की भी मांग की है।

सुप्रीम कोर्ट ने इमरान को लेकर क्या आदेश दिया था : सुप्रीम कोर्ट ने 18 अगस्त को जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान को चिकित्सा जांच और इलाज के लिए दो दिनों के भीतर इस्लामाबाद स्थित शिफा इंटरनेशनल अस्पताल ले जाने का निर्देश दिया था। अदालत ने उनके इलाज के लिए एक विशेष मेडिकल बोर्ड गठित करने को भी कहा था। तीन सदस्यीय पीठ में न्यायमूर्ति शाहिद वहीद, न्यायमूर्ति नईम अख्तर अफगान और न्यायमूर्ति इश्तियाक इब्राहिम शामिल थे। पीठ इमरान के चिकित्सा उपचार, परिवार और वकीलों से मुलाकात समेत उनसे जुड़े कई मामलों की सुनवाई कर रही थी। पीटीआई के मुताबिक, सरकार ने 20 अगस्त को इमरान खान को कुछ समय के लिए पहुंचाया और मेडिकल जांच के बाद उन्हें वापस अदियाला जेल भेज दिया। सरकार ने इसके पीछे सुरक्षा कारणों का हवाला दिया था। विपक्ष ने इस कदम की आलोचना करते हुए इसे सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों का उल्लंघन बताया। यह स्पष्ट करने की मांग की है कि इमरान को शिफा इंटरनेशनल के बजाय क्यों ले जाया गया और डॉक्टरों द्वारा सुझाई गई कोरोनरी एंजियोग्राफी क्यों नहीं कराई गई।

ईरान के खिलाफ अमेरिका का 'इकोनॉमिक डी-डे'; तेहरान बोला- नहीं जाने देंगे तेल की एक भी बूंद

तेहरान, एजेंसी। अमेरिकी ट्रेजरी सेक्रेटरी स्कॉट बेसेंट ने रविवार को कहा कि ट्रंप प्रशासन ईरान के खिलाफ अपने अभियान के 'आखिरी चरण' में प्रवेश कर रहा है। उन्होंने ईरान की आर्थिक जीवन-रेखाओं को काटने के मकसद से 'इकोनॉमिक डी-डे' शुरू करने की घोषणा की। बेसेंट के मुताबिक, यह किसी दुश्मन देश के खिलाफ अब तक का सबसे बड़ा वित्तीय हमला होगा। एक्स पर एक पोस्ट में बेसेंट ने कहा, राष्ट्रपति ट्रंप ने ईरान की सैन्य क्षमताओं को खत्म कर दिया है, उसकी लगभग 100 प्रतिशत सैन्य फैक्ट्रियों को नष्ट कर दिया है और उसके परमाणु कार्यक्रम को खत्म कर दिया है। अब हम आखिरी चरण में प्रवेश कर रहे हैं। सुबह एक आर्थिक डी-डे की शुरुआत होगी यह किसी दुश्मन के खिलाफ अब तक का सबसे बड़ा वित्तीय हमला होगा।

'सुरक्षा गारंटी' को लेकर ईरान पर गंभीर आरोप : बेसेंट ने ईरान पर सुरक्षा गारंटी का इस्तेमाल 'वसूली' के तौर पर करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि तेहरान इस धारणा पर टिका हुआ था कि ईरानी जवाबी कार्रवाई तय है, जबकि अमेरिका की सख्ती पर बातचीत की जा सकती है। इस्लामिक रिपब्लिक ने वसूली को सुरक्षा गारंटी का रूप देकर अपना अस्तित्व बनाए रखा है। इसे इस सोच से ताकत मिली है कि ईरानी जवाबी कार्रवाई तो तय है और अमेरिकी सख्ती पर बातचीत की जा सकती है। राष्ट्रपति ट्रंप के कार्यकाल में वह दौर खत्म हो गया है। और जो लोग तेहरान का विरोध करने के खतरे से डरते हैं, उन्हें वॉशिंगटन को आजमाने की कीमत को कम नहीं आंकना चाहिए।

'हर एजेंसी और हर अधिकार का इस्तेमाल होगा' : बेसेंट ने कहा कि ट्रंप ने अमेरिकी सरकार के लिए ईरान के खिलाफ अपनी सभी शक्तियों का इस्तेमाल करने की परिस्थितियां तैयार कर दी हैं। राष्ट्रपति ने हर एजेंसी, हर अधिकार और ऐसी कार्रवाई का इस्तेमाल करने की परिस्थितियां बना दी हैं, जिनके बारे में कई लोगों को लगता था कि हम कभी उनका इस्तेमाल नहीं करेंगे। हमारा मकसद उस अत्याचारी शासन को बनाए रखने वाली हर आर्थिक जीवन-रेखा को काटना है, ताकि तेहरान अकेला पड़ जाए।

आर्थिक युद्ध जारी रहा तो तेल निर्यात बंद : इस बीच, ईरान की सर्वोच्च राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के सचिव मोहसेन रेज़ाई ने सोमवार को चेतावनी दी कि अगर ईरान के खिलाफ अमेरिका का 'आर्थिक युद्ध' जारी रहता है, तो तेहरान होर्मुज जलडमरूमध्य और फारस की खाड़ी में अन्य जगहों से तेल का पूरा निर्यात रोक सकता है। रेजाई ने एक्स पर एक पोस्ट में यह भी चेतावनी दी कि तेहरान के खिलाफ अमेरिकी आर्थिक अभियान का समर्थन करने या उसमें भाग लेने वाले किसी भी देश के कदम को ईरान 'युद्ध की कार्रवाई' मानेगा। अगर आर्थिक युद्ध जारी रहता है, तो तेल की एक भी बूंद एक्सपोर्ट नहीं की जाएगी न तो होर्मुज जलडमरूमध्य से और न ही फारस की खाड़ी में कहीं से भी। ईरान किसी भी देश की अमेरिका के आर्थिक युद्ध में भागीदारी या समर्थन को जो ईरानी लोगों के खिलाफ है युद्ध की कार्रवाई मानेगा। यह चेतावनी ऐसे समय आई है जब तेहरान और वॉशिंगटन के बीच तनाव लगातार बढ़ रहा है और अमेरिका ईरान पर और सख्त आर्थिक प्रतिबंध लगाने की तैयारी कर रहा है।

घालीबाफ ने अमेरिकी प्रतिबंधों का उड़ाया मजाक : इससे पहले रविवार को ईरानी संसद के स्पीकर मोहम्मद बाघेर घालीबाफ ने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ओर से नए आर्थिक प्रतिबंधों की धमकी के बाद अमेरिका पर तंज कसा। उन्होंने व्यंग्यात्मक अंदाज में कहा कि कठोर आर्थिक प्रतिबंधों का असर अंततः उल्टा पड़ सकता है। एक्स पर एक पोस्ट में घालीबाफ ने अल्पकालिक सरकारी उपायों के जरिए गहरे वित्तीय संकट से निपटने की कोशिशों की सीमाओं पर टिप्पणी की और आर्थिक दबाव के असर पर व्यंग्य किया। उन्होंने कहा,मांस की कीमतों को नियंत्रित करने के लिए फ्रोजन मीट का आयात। ठीक है, यह काम कर सकता है। बॉन्ड के लिए क्या योजना है, क्या फ्रोजन यील्ड का आयात करेंगे आवास के लिए फ्रोजन घर खरीदार वेतन के लिए फ्रोजन पेचेक एक फ्रोजन विदेश नीति एक फ्रोजन अर्थव्यवस्था देती है। एकमात्र चीज जो अभी भी चल रही है ईरान का बूमरैंग।

बल्लेबाजी नहीं, अब गेंदबाजी में भी वैभव का जलवा

बंगलूरू एजेंसी। दलीप ट्रॉफी में ईस्ट जोन और नॉर्थ ईस्ट जोन के बीच मुकाबला जारी है। बंगलूरू के सीओई में खेले जा रहे इस मुकाबले में भले ही वैभव सूर्यवंशी बल्लेबाजी में कोई कमाल न दिखा पाए हों, लेकिन गेंदबाजी में उनका जलवा जारी है। ईस्ट जोन से खेल रहे वैभव ने नॉर्थ ईस्ट जोन की दूसरी पारी में महज चार गेंदों में दो विकेट झटके। उन्होंने तीन ओवर का स्पेल डाला, जिसमें 11 रन खर्च किए और दो विकेट लिए।

पहली पारी में वैभव ने नहीं की गेंदबाजी

दरअसल, मैच में ईस्ट जोन ने पहले बल्लेबाजी करते हुए अपनी पहली पारी में 467 रन बनाए थे। वैभव छह गेंद में दो चौके की मदद से आठ रन बना पाए थे। इसके बाद उनकी आलोचना भी हुई थी और सवाल भी उठे थे कि क्या वह रेड बॉल क्रिकेट के लायक हैं। हालांकि, ईस्ट जोन ने कुमार कुशाग्र के 55 रन, सुदीप कुमार घरामी के 146 रन और शाहबाज अहमद के 167 रन की बदौलत पहाड़ जैसा स्कोर खड़ा किया। जवाब में नॉर्थ ईस्ट जोन की पहली पारी 111 रन पर सिमट गई। इस तरह उन्हें फॉलो ऑन खेलने पर मजबूर होना पड़ा। पहली पारी में वैभव ने गेंदबाजी नहीं की।

गेंद से जवाब

मैच में सूर्यवंशी बल्ले से ज्यादा प्रभाव नहीं छोड़ सके। हालांकि, उन्होंने जल्द ही गेंदबाजी से इसकी भरपाई कर दी। किशोर खिलाड़ी ने अपनी गेंदबाजी से दिखाया कि उनकी क्रिकेटिंग क्षमता सिर्फ आक्रामक बल्लेबाजी तक सीमित नहीं है। सूर्यवंशी पहले ही अपनी विस्फोटक बल्लेबाजी और गेंदबाजों पर आक्रमण करने की क्षमता के लिए सुर्खियां बटोर चुके हैं।

विकेट झटके और चौंकाया

हालांकि, फॉलोऑन खेलते हुए भी नॉर्थ ईस्ट जोन ने एक वक्त 102 रन बनाने में आठ विकेट गंवा दिए थे। इनमें दो विकेट वैभव ने लिए। उन्होंने अपने दूसरे ओवर की दूसरी गेंद पर मध्यक्रम के बल्लेबाज किशन लिंगडोह को आउट किया। किशन अच्छी बल्लेबाजी कर रहे थे और 40 गेंद में दो चौके और एक छक्के की मदद से 25 रन बना लिए थे। वैभव ने उन्हें कैच आउट कराया। फिर ओवर की पांचवीं गेंद पर लोअर ऑर्डर के बल्लेबाज इमलीवाती लेमतुर को ईशान किशन के हाथों कैच कराया। इमलीवाती चार रन बना सके। वैभव एक लेफ्ट आर्म ऑर्थोडॉक्स स्पिनर हैं। हालांकि, उनकी गेंद नॉर्थ ईस्ट जोन के बल्लेबाजों को समझ नहीं आई। फॉलो ऑन खेलते हुए नॉर्थ ईस्ट जोन की पूरी टीम 146 रन पर सिमट गई और ईस्ट जोन ने मुकाबला पारी और 210 रन से अपने नाम किया। वैभव के अलावा अनुकूल रॉय ने पांच विकेट लिए। वहीं, मुकेश कुमार, अभिजीत सरकार और शाहबाज को एक-एक विकेट मिला।

सूर्यवंशी ने छोड़ी अपनी छाप

दलीप ट्रॉफी में सूर्यवंशी की एंट्री नए सीजन की शुरुआत के साथ हुई है। युवा खिलाड़ी ने टी20 क्रिकेट की तेज-तर्रार मांगों से अब लंबे प्रारूप की चुनौती का रुख किया है। उन्हें ईस्ट जोन का उपकप्तान भी बनाया गया है। हालांकि, उनकी उम्र और प्रथम श्रेणी क्रिकेट में सीमित अनुभव को देखते हुए यह फैसला कुछ लोगों के लिए हैरानी भरा भी था।

संक्षिप्त समाचार

कोको गॉफ और आर्थर फिल्स चैंपियन बने

मेसन (अमेरिका) (एजेंसी)। कोको गॉफ ने हमवतन अमेरिकी खिलाड़ी जेसिका पेगुला को सीधे सेटों में हराकर सिनसिनाटी ओपन टेनिस टूर्नामेंट का महिला एकल खिताब दूसरी बार अपने नाम कर लिया। वहीं, पुरुष एकल के फाइनल में फ्रांस के आर्थर फिल्स ने अमेरिका के फ्रांसिस टियाफो को हराकर अपने करियर का पहला एटीपी मास्टर्स 1000 खिताब जीत लिया। महिला एकल के फाइनल में कोको गॉफ ने शानदार प्रदर्शन करते हुए जेसिका पेगुला को 6-2, 6-4 से मात दी। गॉफ ने मैच की शुरुआत से ही आक्रामक खेल दिखाया और पहले सेट में 5-0 की मजबूत बढ़त हासिल करने के बाद उसे 6-2 से अपने नाम किया। दूसरे सेट में पेगुला ने वापसी करने की कोशिश की और स्कोर को 5-4 तक पहुंचा दिया। हालांकि, गॉफ ने दबाव में शानदार संयम दिखाया और मैच जीतकर सिनसिनाटी में अपना दूसरा महिला एकल खिताब जीत लिया। गॉफ ने मुकाबले के दौरान मिले छह में से पांच ब्रेक प्वाइंट को भुनाया। पेगुला ने सेमीफाइनल में मौजूदा चैंपियन इगा स्वियातेक को हराया था, जबकि गॉफ ने सारा बेजलेक को मात देकर फाइनल में जगह बनाई थी। इसके साथ ही सिनसिनाटी ओपन में 56 वर्षों बाद दो अमेरिकी महिला खिलाड़ियों के बीच महिला एकल का फाइनल खेला गया। इससे पहले वर्ष 1970 में सिनसिनाटी ओपन के महिला फाइनल में अमेरिका की रोजी कैसल्स और नैन्सी रिची आमने-सामने हुई थीं। उस मुकाबले में कैसल्स ने जीत दर्ज की थी। गॉफ इससे पहले वर्ष 2023 में कैरोलिना मुचोवा को हराकर सिनसिनाटी ओपन का अपना पहला खिताब जीत चुकी थीं। अब उन्होंने दूसरी बार ट्रॉफी अपने नाम कर इस टूर्नामेंट में अपनी मजबूत पकड़ साबित की है।

अंपायर पर हमले का आरोपी 36 साल बाद पकड़ा गया

मुंबई (एजेंसी)। 1990 में मुंबई के बोरीवली इलाके में क्रिकेट मैच के दौरान अंपायर पर हमला करने के आरोपी ओमप्रकाश ललता पासी को 36 साल बाद गिरफ्तार किया गया है।घटना के वक्त पासी 18 साल का था। पासी आउट दिए जाने से नाराज होकर उसने अंपायर पर बल्ले से हमला किया था। हमले में अंपायर गंभीर रूप से घायल हो गया था। इसके बाद पासी मौके से भाग गया।पासी पर हत्या की कोशिश का मामला दर्ज है। अब 55 साल का पासी पड़ोसी ठाणे जिले के मीरा रोड इलाके में रह रहा था।

तकनीकी जांच से आरोपी तक पहुंची पुलिस- एक अधिकारी ने बताया, 'बोरीवली पुलिस की तकनीकी जांच और लगातार कोशिशों से पासी का पता लगाया गया।'पुलिस के अनुसार 1990 में पासी बोरीवली में क्रिकेट मैच खेलने गया था। अंपायर ने उसे आउट करार दिया, जिससे नाराज होकर उसने अपने पास मौजूद क्रिकेट बैट से अंपायर पर हमला कर दिया।

हॉकी : भारतीय पुरुष टीम के खराब प्रदर्शन के बाद दिग्गजों ने उठाए सवाल

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय पुरुष हॉकी टीम का विश्व कप में 51 साल बाद पदक जीतने का इंतजार इस बार भी खत्म नहीं हो सका। अर्जेंटीना के खिलाफ 3-5 की हार के साथ टीम की सेमीफाइनल में पहुंचने की उम्मीदें भी समाप्त हो गईं। इस हार ने पेरिस ओलंपिक के बाद से टीम के प्रदर्शन में नजर आ रही कमजोरियों को एक बार फिर सामने ला दिया है।

पूर्व दिग्गज खिलाड़ियों का मानना है कि समस्या सिर्फ धीमी शुरुआत, मौकों को गंवाने या डिफेंस में चूक तक सीमित नहीं है। उनका कहना है कि युवा खिलाड़ियों को समय रहते मौके नहीं देना और एक ही कोर ग्रुप पर लगातार निर्भर रहना भी टीम के लिए नुकसानदेह साबित हुआ है।

युवा खिलाड़ियों को मौका नहीं देने पर सवाल

पेरिस ओलंपिक में कांस्य पदक जीतने के बाद संन्यास लेने वाले पूर्व गोलकीपर पीआर श्रीजेश ने टीम में युवा खिलाड़ियों को समय पर शामिल नहीं किए जाने पर सवाल उठाया। उन्होंने कहा कि लॉस एंजिलिस ओलंपिक में अब ज्यादा समय नहीं बचा है और इतने कम अंतरराष्ट्रीय मैचों में नए खिलाड़ियों को तैयार करना मुश्किल होगा।

श्रीजेश ने कहा, 'सीनियर खिलाड़ियों के जाने के बाद उनकी जगह कौन लेगा। क्या हमने दूसरी जमात तैयार की है। लॉस एंजिलिस ओलंपिक में दो ही साल बचे हैं और उससे पहले करीब तीस अंतरराष्ट्रीय मैच ही होंगे। क्या ओलंपिक के लिये इससे खिलाड़ी तैयार हो सकते हैं। नहीं।' उन्होंने कहा, 'विश्व कप की टीम में भी वही कोर खिलाड़ी हैं जबकि मनमीत सिंह, आमिर अली, रोशन कुजूर, तालेम प्रियब्रत, रोहित, अर्शदीप जैसे कई प्रतिभाशाली जूनियर इंतजार ही कर रहे हैं।'

चयन केपर भी उठे सवाल

पूर्व ओलंपियन जगबीर सिंह ने भी चयन प्रक्रिया को लेकर सवाल उठाए। उनका मानना है कि जूनियर खिलाड़ियों को सही समय पर अवसर दिए जाने चाहिए थे और कुछ चयन फैसलों को बेहतर किया जा सकता था। जगबीर सिंह ने कहा, 'जूनियर खिलाड़ियों को सही समय पर मौके मिलने चाहिये और चयन के कुछ फैसले बेहतर हो सकते थे। तैयारी ओलंपिक से ओलंपिक की होनी चाहिये। कोचिंग स्टाफ ने अनुभव को ही तरजीह दी जो काम नहीं आया। भारत के पास यह सर्वश्रेष्ठ मौका था लेकिन प्रदर्शन में निरंतरता नहीं दिखी। हर दस मिनट में डिफेंस चरमरा रहा था।'

घरेलू ढांचे को बताया कमजोर

पूर्व ओलंपियन परगट सिंह ने भारतीय हॉकी के घरेलू ढांचे को लेकर चिंता जताई। उनका मानना है कि अच्छी घरेलू प्रतियोगिताओं की कमी के कारण टीम के पास मजबूत बेंच स्ट्रेंथ तैयार नहीं हो पा रही है। परगट सिंह ने कहा, 'अच्छी घरेलू स्पर्धायें नहीं होने से हमारे पास अच्छी बेंच स्ट्रेंथ नहीं है। यूरोप में कई डिविजन की लीग होती है जो हमारे यहां नहीं है। पहले बेटन कप, आगा खान कप, बांबे गोल्ड कप, मुरूगप्पा कप, नेहरू हॉकी से अच्छी प्रतिभायें निकलती थी। सारा ढांचा ही खराब कर दिया है। इसके अलावा नये खिलाड़ियों को मौका देना था तो दो साल पहले ही बदलाव की शुरूआत कर देनी चाहिये थी।

भास्करन ने फॉरवर्ड और मिडफील्ड पर उठाए सवाल

ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता और पूर्व कप्तान वासुदेवन भास्करन ने भारतीय टीम के आक्रमण और मिडफील्ड के प्रदर्शन पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि पिछले चार साल में भारतीय फॉरवर्ड लाइन का प्रदर्शन उन्हें प्रभावित नहीं कर सका। भास्करन ने कहा, 'मैंने पिछले चार साल में किसी भारतीय फॉरवर्ड को अच्छा खेलते नहीं देखा। बैक पास कहां थे, गोल पर कितने हमले किये और फुल प्रेस जाने के समय मिडफील्ड पूरा खाली छोड़ दिया।'

उन्होंने टीम में नए खिलाड़ियों को मौके नहीं देने पर भी सवाल उठाया। भास्करन ने कहा, 'हमने नये खिलाड़ियों को मौके ही नहीं दिये। नीदरलैंड की पेरिस ओलंपिक टीम के छह स्वर्ण पदक विजेता खिलाड़ी विश्व कप टीम में नहीं थे। हम हमदर्दी, पिछले रिकॉर्ड और आंकड़ों पर ही टीम चुन लेते हैं। कम से कम छह जूनियर खिलाड़ियों को प्रो लीग में आजमाना चाहिये था।' उन्होंने जूनियर विश्व कप कांस्य पदक विजेता कोच श्रीजेश से सलाह नहीं लिए जाने पर भी सवाल उठाया। उनका कहना था कि दूसरे देशों में जूनियर कोचों की भूमिका अहम होती है और वे सीनियर कोचों को भी अपनी राय देते हैं।

जीसीटी ग्रैंड फिनाले: फाइनल में पहुंचे प्रज्ञानंद

नई दिल्ली। भारतीय ग्रैंडमास्टर आर. प्रज्ञानंद ने जर्मनी के विंसेंट कीमर पर 19-9 की शानदार जीत हासिल करके आसानी से ग्रैंड शतरंज टूर (जीसीटी) के अंतिम चरण के फाइनल में जगह बनाई। प्रज्ञानंद का फाइनल में मुकाबला खिताब के प्रबल दावेदार और मौजूदा चैंपियन अमेरिका के फैबियानो कारुआना से होगा।

प्रज्ञानंद ने अब तक किया है शानदार प्रदर्शन

भारतीय खिलाड़ी ने दूसरा क्लासिकल गेम जीतने के बाद अंतिम दिन से पहले छह अंकों की बड़ी बढ़त हासिल कर ली थी। उन्होंने लगातार दो रैपिड मुकाबलों में कीमर को हराकर 17-3 की अजेय बढ़त हासिल करके फाइनल में अपनी जगह पक्की कर दी। इसके बाद ब्लिट्ज के पहले गेम में एक और जीत ने उनके अंकों की संख्या 19 तक पहुंचा दी। कीमर ने आखिरी तीन ब्लिट्ज गेम जीतकर वापसी की, लेकिन इससे हार का अंतर ही कम हुआ। कारुआना ने ब्लिट्ज गेम में अपने शानदार प्रदर्शन के दम पर 18-9 से जीत हासिल की। उन्होंने मौकों का पूरा फायदा उठाया और अमेरिका के अपने हमवतन खिलाड़ी वेस्ली सो को हराया।

बालाजी-चंद्रशेखर बने चैंपियन

मैक्सिको (एजेंसी)। भारत के एन. श्रीराम बालाजी और अनिरुद्ध चंद्रशेखर ने मैक्सिको में खेले गए कानकुन कंट्री टेनिस ओपन का डबल्स खिताब जीत लिया है।

भारतीय जोड़ी ने फाइनल में मैक्सिको के मिगुएल एंजेल रेयेस-वरेला और बेलारूस के इवान ल्युटारेविच को 6-3, 7-6(4) से हराया।इस जीत के साथ बालाजी और अनिरुद्ध को 125-125 एसोसिएशन ऑफ टेनिस प्रोफेशनल्स रैंकिंग पॉइंट्स और 9,900 डॉलर (करीब 9.5 लाख रुपए) की इनामी राशि मिली।

पहले सेट में 6-3 से जीते, दूसरा टाईब्रेकर में

फाइनल के पहले सेट में दोनों जोड़ियों के बीच मुकाबला कड़ा रहा, लेकिन भारतीय जोड़ी ने अहम मौकों पर बढ़त बनाते हुए सेट 6-3 से अपने नाम किया।भारतीय जोड़ी ने पहली सर्विस पर 68 प्रतिशत और दूसरी सर्विस पर 81 प्रतिशत अंक जीते। दूसरे सेट में भी मुकाबला बराबरी का रहा और सेट टाईब्रेकर तक पहुंचा।बालाजी और अनिरुद्ध ने टाईब्रेकर में 7-4 से जीत दर्ज की और 7-6(4) से दूसरा सेट अपने नाम करते हुए खिताब जीत लिया।

श्रीलंका मुश्किल में, मंडराया फॉलोऑन का खतरा

कोलंबो(एजेंसी)। कोलंबो टेस्ट में श्रीलंका पर फॉलोऑन का खतरा मंडरा रहा है। उसने भारत के खिलाफ पहली पारी में 257 रन पर 8 विकेट गंवा दिए हैं। मंगलवार को मैच के तीसरे दिन श्रीलंका को फॉलोऑन बचाने के लिए 47 रन और बनाने हैं। भारत ने पहली पारी में 503 रन बनाए थे।

सोनल दिनूषा फिफ्टी बनाकर खेल रहे हैं। लाहिरू कुमारा उनका साथ दे रहे हैं। पसिंदु सूरियाबंडारा ने 133 गेंदों पर 80 रन की पारी खेलकर श्रीलंका की पारी संभालने की कोशिश की, लेकिन रवींद्र जडेजा ने उन्हें बोल्ड कर दिया।

मोहम्मद सिराज ने निरोशन डिकवेला को बिना खाता खोले पवेलियन भेज दिया। भारत की ओर से प्रसिद्ध कृष्णा और मानव सुथार ने 3-3 विकेट लिए। रवींद्र जडेजा और मोहम्मद सिराज को एक-एक विकेट मिला।

श्रीलंका ने पहली पारी में 250 रन का आंकड़ा पार कर लिया है। लाहिरू कुमारा ने रवींद्र जडेजा के ओवर की आखिरी बॉल पर चौका लगाया। इसी चौके से टीम 250 पार पहुंच गई।69वें ओवर में श्रीलंका ने 8वां विकेट गंवा दिया। मानव सुथार ने केशरा नुवानथा को सारांश जैन के हाथों कैच कराया। सुथार की गेंद पर नुवानथा ने मिड-ऑफ के ऊपर से बड़ा शॉट खेलने की कोशिश की, लेकिन गेंद ऊंची नहीं उठी और सरांश जैन ने आसान कैच लपक लिया।

प्रभाथ जयसूर्या पर आईसीसी की कार्रवाई

श्रीलंका के स्पिनर प्रभाथ जयसूर्या पर भारत के खिलाफ कोलंबो टेस्ट के दूसरे दिन आईसीसी ने कार्रवाई की है। जयसूर्या को आईसीसी कोड ऑफ कंडक्ट के लेवल-1 के उल्लंघन का दोषी पाया गया और उन्हें आधिकारिक फटकार लगाई।जयसूर्या ने आर्टिकल 2.2 का उल्लंघन किया, जो अंतरराष्ट्रीय मैच के दौरान क्रिकेट उपकरण, कपड़ों, मैदान के उपकरण या फिक्स्चर को नुकसान पहुंचाने या उसका गलत इस्तेमाल करने से जुड़ा है।दिन की आखिरी गेंद पर आउट होने के बाद पवेलियन लौटते समय जयसूर्या ने अपने बल्ले से बाउंड्री रोप पर बैट मारा था। उनके रिकॉर्ड में एक डिमेरिट पॉइंट भी जोड़ा गया है।

28 अगस्त से शुरू होगा महिला टी-20 एशिया कप 2026 का रोमांच

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय महिला क्रिकेट टीम की कप्तान हरमनप्रीत कौर ने एसीसी महिला टी20 एशिया कप 2026 में भारत और पाकिस्तान के बीच होने वाले बहुप्रतीक्षित मुकाबले से पहले बड़ा बयान दिया है। हरमनप्रीत ने स्वीकार किया कि भारत-पाकिस्तान मैच का दबाव किसी अन्य अंतरराष्ट्रीय मुकाबले से बिल्कुल अलग होता है। हालांकि, उन्होंने जोर दिया कि खिलाड़ियों को नतीजे की चिंता करने के बजाय अपनी योजना, रूटीन और टीम की जरूरत पर ध्यान देना चाहिए।

महिला टी20 एशिया कप 2026 का आगाज 28 अगस्त से होगा, जबकि भारत और पाकिस्तान की टीमें 5 सितंबर को ग्रुप स्टेज के हाई-वोल्टेज मुकाबले में आमने-सामने होंगी।

हरमनप्रीत कौर ने कहा कि भारत-पाकिस्तान मुकाबले में खिलाड़ियों पर मानसिक दबाव काफी ज्यादा होता है और इस मुकाबले की अहमियत अन्य बड़े अंतरराष्ट्रीय मैचों से अलग होती है।

हरमनप्रीत ने मीडिया से कहा, 'इसमें कोई शक नहीं कि यह एक हाई-प्रेशर गेम है और एक खिलाड़ी के तौर पर आपको कई चीजों से निपटना पड़ता है। हम लगातार अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खेलते हैं, लेकिन भारत-पाकिस्तान मैच में जिस तरह का दबाव होता है, वैसा दबाव कहीं और महसूस नहीं होता।' उन्होंने आगे कहा, 'आप कई बड़े मुकाबले खेल सकते हैं, लेकिन उस तरह का दबाव महसूस नहीं होता। कहीं न कहीं हमें पता होता है कि हर भारतीय यह मैच देख रहा है। सिर्फ क्रिकेट फैंस ही नहीं, बल्कि हर भारतीय की नजर इस मैच पर होती है, क्योंकि यह मुकाबला हम सभी के लिए बहुत अहम होता है।'भारतीय कप्तान ने कहा कि ऐसे मुकाबलों में अतिरिक्त दबाव लेने के बजाय खिलाड़ियों के लिए अपने खेल पर ध्यान केंद्रित करना जरूरी है। उन्होंने कहा कि वह कप्तान और खिलाड़ी, दोनों भूमिकाओं में चीजों को आसान और सरल रखने की कोशिश करती हैं।

हम नफरत के खिलाफ खड़े हों, वही सच्ची देशभक्ति

अपनी पहली हिंदी फिल्म 'रंग दे बसंती' हो या हालिया वेब सीरीज 'ऑपरेशन सफेद सागर', एक्टर सिद्धार्थ ने देशभक्ति वाली कहानियों और किरदारों में अलग ही छाप छोड़ी है। 'रंग दे बसंती' में शहीद भगत सिंह बने सिद्धार्थ इन दिनों 'ऑपरेशन सफेद सागर' में करगिल युद्ध में वीरगति पाने वाले स्क्वॉड्रन लीडर अजय आहूजा की भूमिका के लिए खूब वाहवाही बटोर रहे हैं। इसकी एक वजह शायद यह है कि सिद्धार्थ निजी तौर पर भी खुद को हर मायने में देशभक्त मानते हैं।

अपनी देशभक्ति को लेकर वह कहते हैं, 'मैं तो बचपन से अपने को देशभक्त मानता हूं, क्योंकि मैंने हमेशा सच बोला है। अगर मेरी आंखों के सामने कोई अन्याय हो रहा हो तो मैंने उसके खिलाफ आवाज उठाई है। मैं कभी टैक्स देने में झिझका नहीं हूं, तो मैं हर मायने में देशभक्त हूं। बाकी, मैं चाहता हूं कि आज हर तरफ जो नफरत की आग और आंधी फैल रही है, हम अगर उसके खिलाफ एकजुट होकर खड़े हो जाएं तो मेरे हिसाब से वो बहुत बड़ी देशभक्ति की मिसाल होगी। मैं बस यही कहूंगा कि प्यार बढ़ाओ यार।'

ऐसी जांबाजी सबके बस की बात नहीं

क्या ऐसे देशभक्ति वाले किरदार करते वक्त उनके भीतर भी ऐसा जज़्बा जोर मारता है? यह पूछने पर सिद्धार्थ कहते हैं, 'नहीं, ऐसा नहीं होता है। मैंने देशभक्ति वाले रोल पहले भी किए हैं, लेकिन मुझे कभी एक सेकेंड के लिए भी यह नहीं लगा कि काश मैं खुद भी ऐसा कर पाता। इसलिए नहीं कि मैं वो बनना नहीं चाहता, बल्कि मुझमें वो बात ही नहीं है। यह जुनून, यह जज़्बा बहुत कम लोगों में होता है। अगर मुझे एनडीए जॉइन करना पड़ता तो पहले तो मैं चश्मा पहनता था, इसलिए एनडीए में जा नहीं सकता, लेकिन चश्मा ना पहनता तब भी मैं शायद नहीं जाता, क्योंकि मुझमें वह बात ही नहीं है। इसलिए, मुझे कभी नहीं लगा कि मैं स्क्वॉड्रन लीडर अजय आहूजा बन गया हूं। मैं इस जन्म तो क्या, अगले जन्म में भी वैसा नहीं बन सकता। हम सिर्फ अदाकारी कर सकते हैं।'

हालांकि सिद्धार्थ इस भूमिका को निभाना एक बड़ी जिम्मेदारी मानते हैं। बकौल सिद्धार्थ, 'यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी थी और एक भी दिन ऐसा नहीं बीता होगा जब वो जिम्मेदारी का अहसास हमें न हुआ हो। अच्छी बात यह रही कि इसकी रिसर्च बहुत तगड़ी थी तो उससे आधा काम हो गया। बाकी, आधा काम उनके परिवार वालों का आशीर्वाद ने कर दिया तो हम उम्मीद है कि आज की नई पीढ़ी इस साहस के बारे में देख-सुनकर इससे प्रेरित हो।'

धीमा सुनने वालों को धमाके की जरूरत

सिद्धार्थ ने कहा कि यह कहानी नई पीढ़ी को प्रेरित करेगी, मगर क्या उन्हें लगता है कि आज के सोशल मीडिया के दौर में भी सिनेमाई कहानियां इतनी ताकतवर रह गई हैं कि लोगों की सोच बदल सकें? इस पर सिद्धार्थ कहते हैं, 'ये बहादुरी का किस्सा है और हमारी हजारों साल की परंपरा रही है कि हम बच्चों को कहानियां सुनाकर सुलाते हैं, उन्हें बड़ा करते हैं तो जब तक इंसान के बच्चे हैं, तब तक ऐसी कहानियां प्रासंगिक रहेंगी। इनकी बहुत जरूरत है और ये आनी चाहिए, क्योंकि ये सोशल मीडिया वाली बहुत जरूरी बात कही आपने। जब मैं स्कूल में पढ़ता था तो कुछ पचास हजार लोगों में एक बंदा किताब पढ़ता था। आज साढ़े 5 लाख में एक बंदा किताब पढ़ता है। इंटरनेट पर सबकुछ है, लेकिन वहां पढ़ने-जानने की इच्छा किसी में नहीं है।'

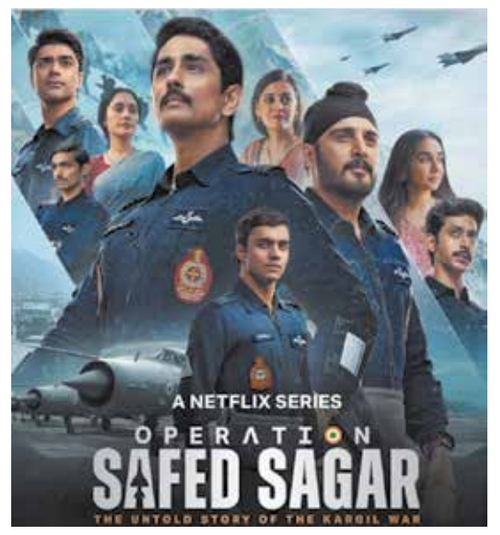

मालामाल वीकली 2 में बतौर एक्टर डेब्यू कर रहे हैं एल्विश यादव

एल्विश यादव अब जल्द ही बॉलीवुड में बतौर एक्टर डेब्यू करने वाले हैं। यूट्यूबर से रियलिटी शो स्टार और अब बॉलीवुड एक्टर तक का उनका सफर काफी खास रहा है। एल्विश ने अपने एक्स अकाउंट पर फैंस का शुक्रिया अदा किया और कहा कि आज वह जो कुछ भी हैं, अपने फैंस के प्यार और सपोर्ट की वजह से हैं।

एल्विश ने फैंस के लिए लिखा खास मैसेज

एल्विश ने अपनी नई फिल्म का ऐलान करते हुए लिखा, 'नई फिल्म। नया सफर। मैं बाहर से आया हूं। बॉलीवुड में मेरा कोई नहीं था। आप लोगों के बीच से उठकर आया और आपके प्यार ने मुझे अब बड़े पर्दे तक पहुंचा दिया। आज जो कुछ भी हूं, आपके प्यार की वजह से हूं। और इसी प्यार की वजह से मैं 'मालामाल' हूं। बस प्यार बनाए रखना।'

इस फिल्म में नजर आएंगे एल्विश

बॉलीवुड हंगामा की रिपोर्ट्स के मुताबिक, एल्विश यादव फिल्म 'मालामाल वीकली 2' में नजर आएंगे। इस फिल्म में उनके साथ रितेश देशमुख, परेश रावल और राजपाल यादव भी दिखाई देंगे।

बता दें कि 'मालामाल वीकली' साल 2006 में रिलीज हुई थी और बॉक्स ऑफिस पर फिल्म को काफी सफलता मिली थी। फिल्म का निर्देशन प्रियदर्शन ने किया था। इसमें परेश रावल, ओम पुरी, रितेश देशमुख और अरबाज खान जैसे कलाकार नजर आए थे। रिपोर्ट्स के मुताबिक, 'मालामाल वीकली 2' में पहली फिल्म के तेश देशमुख, परेश रावल और राजपाल यादव वापसी कर रहे हैं। वहीं फिल्म में परिणीति चोपड़ा, रवीना टंडन और शिल्पा शिरोडकर को फीमेल कास्ट के तौर पर साइन किया गया है।

सगाई और रिलेशनशिप को लेकर पूजा बेदी ने की बात

पूजा बेदी ने हाल ही में रिलेशनशिप को लेकर अपनी राय रखी। उन्होंने यह भी बताया कि शादी को लेकर उनकी सोच काफी बदल चुकी है। एक्ट्रेस ने अपने मंगेतर मानेक कॉन्ट्रैक्टर से शादी के बारे में भी काफी कुछ कहा।

पूजा बेदी ने विक्की लालवानी से बातचीत के दौरान शादी के इरादे पर बात की। उन्होंने कहा कि शादी उनके सपनों का हिस्सा नहीं है। वह खुद को शादीशुदा की तरह ही मानती हैं। पूजा बोलीं. कई साल बीत जाने पर शादी को लेकर मेरी सोच में काफी बदलाव आया है। मानेक कॉन्ट्रैक्टर से सगाई को 8 साल हो जाने पर भी शादी को लेकर अभी कोई प्लान नहीं है। मेरे लिए सगाई ही काफी है। शादी होना कोई जरुरी चीज नहीं है। ऐसा करने से कपल की आर्थिक स्थिति बेहतर होती है। वह अपनी-अपनी संपत्ति अपने बच्चों के लिए छोड़ सकते हैं। मैं आधिकारिक तौर पर शादी किए बिना भी खुद को शादीशुदा मानती हूं।

आगे अपनी बातचीत में पूजा ने कहा, 'मेरी शादी हुई, मेरा तलाक हो गया, मेरे दो बच्चे हैं। उनकी भी शादी हुई, उनका तलाक हो गया, उनके भी बच्चे हैं। संपत्ति जैसी छोटी-छोटी बातों में तो सब कुछ बहुत सरल है। मेरी संपत्ति मेरे बच्चों को मिलेगी, उनकी संपत्ति भी उनके बच्चों को मिलेगी। मैं कमा रही हूं, वह कमा रहे हैं, हम दोनों आत्मनिर्भर हैं। मुझे सुरक्षा के लिए उनकी जरूरत नहीं है। उन्हें भी आर्थिक सुरक्षा के लिए मेरी जरूरत नहीं है।'

पूजा बेदी ने साल 1994 में व्यवसायी फरहान फर्नीचरवाला से पहली शादी की थी, जिनसे उनके दो बच्चे (अलाया और उमर) हैं। वर्ष 2003 में दोनों का तलाक हो गया था। इसके बाद फरवरी 2019 में उन्होंने मानेक कॉन्ट्रैक्टर से सगाई की है। बताते चलें पूजा बेदी ने 'जो जीता वही सिकंदर', 'लुटेरे', 'आतंक ही आतंक' और 'फिर तेरी कहानी याद आई' जैसी फिल्मों में काम किया है।

महाकाव्य श्री रामायण कथा में अहम भूमिका निभाएंगी अंजलि अरोड़ा

इन दिनों राम कथा पर कई फिल्में बन रही हैं। नमित मल्होत्रा प्रोड्यूस और नितेश तिवारी निर्देशित फिल्म 'रामायण' खूब चर्चा में है। इसी बीच एक और फिल्म राम कथा पर बन रही है। इस फिल्म का नाम 'महाकाव्य श्री रामायण कथा' है। इस फिल्म के जरिए अंजलि अरोड़ा अपना एक्टिंग डेब्यू भी रही हैं। फिल्म 'महाकाव्य श्री रामायण कथा' के टीजर में राम और सीता विवाह, वनवास यात्रा और रावण की झलक भी मिली है। इस फिल्म में अंजलि अरोड़ा माता सीता के रूप में नजर आएंगी। वहीं देव शर्मा भगवान राम का किरदार निभाएंगे। महोबिया फिल्म्स के प्रोडक्शन तले बनी इस फिल्म को प्रकाश महोबिया और संजय बुंदेला ने प्रोड्यूस किया है।

टॉक्सिक ने उन्हें कम्फर्ट जोन से बाहर निकाला और अनजान चीजों को अपनाना सिखाया

अभिनेत्री कियारा आडवाणी बहुप्रतिक्षित भारतीय एक्शन-ड्रामा फिल्म 'टॉक्सिक: ए फेयरी टेल फॉर ग्रोन-अप्स' में एक परतदार और बोल्ड सर्कस कलाकार का किरदार निभा रही हैं। अभिनेत्री ने अभिनय की दुनिया के अनुभव के बारे में बताया। अभिनेत्री ने इंस्टाग्राम पर फिल्म की मेकिंग के दौरान की अपनी एक दिलचस्प तस्वीर शेयर की। तस्वीर में, एक्ट्रेस पानी से भरे एक बड़े, ट्रांसपेरेंट, कटोरे जैसे टैंक के अंदर आराम करती दिख रही हैं। अभिनेत्री कियारा आडवाणी ने अपनी पोस्ट के जरिए बताया कि फिल्म ने उन्हें उनके कम्फर्ट जोन से बाहर निकाला और अनजान चीजों को अपनाना और रास्ते में नई स्किल्स सीखना सिखाया। अभिनेत्री ने लिखा, 'फिल्में हमें ऐसी दुनिया में ले जाती हैं, जिसे हम कभी जानते ही नहीं, कभी-कभी तो सचमुच हर नया किरदार, नया सेट और क्रेजी चैलेंज आपको कुछ ऐसा सिखाता है, जिसके बारे में आपको पता नहीं होता है कि आप इसके काबिल भी हैं कि नहीं।' अभिनेत्री ने बताया कि फिल्मों ने उन्हें काफी सारी बातें सिखाई हैं। उन्होंने लिखा, 'फिल्मों ने मुझे अनजान चीजों के साथ कम्फर्टेबल, क्यूरियस, सीखते रहना और इन सबके एडवेंचर में खुशी ढूंढना सिखाया। क्योंकि मेरे लिए, ग्रोथ हमेशा उन चीजों के लिए हाँ कहने के बारे में रही है जो आपको थोड़ा डराती हैं और उसके बाद के सफ़र को पसंद करने के बारे में।' उन्होंने आगे लिखा, 'यह नई स्किल्स, नए एडवेंचर और उस तरह के पैशन के लिए है जो आपको बार-बार इसमें कूदने के लिए तैयार रखता है।'

अभिनेत्री कियारा आडवाणी आगामी पैन-इंडिया गैंगस्टर फिल्म 'टॉक्सिक: ए फेयरी टेल फॉर ग्रोवन-अप्स' में मुख्य अभिनेत्री के तौर पर नजर आएंगी, जहां वह 'नादिया' नाम की एक सर्कस परफॉर्मर का किरदार निभा रही हैं। इस फिल्म में उनकी जोड़ी सुपरस्टार यश के साथ है। फिल्म के टीजर और गाने पहले ही रिलीज कर दिए जा चुके हैं, जिसमें अभिनेत्री यश के साथ कुछ बोल्ड और इंटिमेट सीन्स में नजर आई, जो सोशल मीडिया पर काफी चर्चा में रहे हैं।

नया शो ला रहीं एकता कपूर!

पहली बार नजर आएगी गौरव खन्ना और श्रद्धा आर्या की जोड़ी?

गौरव खन्ना बीते कई दिनों से अपनी पत्नी आकांक्षा चमोला के तलाक वाले बयान के बाद से सुर्खियों में हैं। वहीं श्रद्धा आर्या भी टीवी के जाने-माने चेहरों में से एक हैं। अब खबरें सामने आ रही हैं कि दोनों एकता कपूर के शो में नजर आ सकते हैं।

फैमिली ड्रामा का बन सकते हैं हिस्सा

खबरों के मुताबिक, दोनों एक्टर्स एकता कपूर के अपकमिंग रोमांटिक फैमिली ड्रामा का हिस्सा बन सकते हैं। यह शो स्टार प्लस पर आने की बात कही जा रही है। फिलहाल शो को लेकर मेकर्स की तरफ से कोई आधिकारिक ऐलान नहीं किया गया है। बताया जा रहा है कि प्रोजेक्ट अभी डेवलपमेंट और कास्टिंग स्टेज में है। अगर दोनों की कास्टिंग फाइनल होती है, तो यह पहली बार होगा जब गौरव और श्रद्धा किसी शो में साथ नजर आएंगे।

रिपोर्ट्स के मुताबिक, यह शो एक रोमांटिक फैमिली ड्रामा होगा। कहानी में प्यार के साथ-साथ परिवार, रिश्ते और उनके बीच आने वाली परेशानियों को दिखाया जाएगा। इस शो को एकता कपूर की प्रोडक्शन कंपनी बालाजी टेलीफिल्म्स तैयार कर रही है। फिलहाल मेकर्स शो के लिए बाकी कलाकारों की कास्टिंग पर भी काम कर रहे हैं।

दमण के युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए 1 सितंबर को दमण में रोजगार मेला का होगा आयोजन

- 1 सितंबर को सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक कोली समाज हॉल नानी दमण आयोजित होगा रोजगार मेला

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण 25 अगस्त। संघ प्रदेश दादरा नगर हवेली और दमण-दीव के प्रशासक प्रफुल पटेल के सक्षम मार्गदर्शन में संघ प्रदेश प्रशासन द्वारा क्षेत्र के युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से रोजगार मेला आयोजित किया जा रहा है। इस रोजगार मेले में विभिन्न प्रतिष्ठित कंपनियां भाग लेंगी तथा विभिन्न रोजगार अवसरों के लिए पात्र उम्मीदवारों का चयन करेंगी। यह रोजगार मेला उद्योग एवं उद्योग संघों, शैक्षणिक संस्थानों, श्रम एवं रोजगार विभाग, पर्यटन विभाग, जिला पंचायत, दमण नगरपालिका परिषद, स्वास्थ्य विभाग आदि के समन्वय से आयोजित किया जा रहा है। रोजगार मेला 1 सितंबर को सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक कोली समाज हॉल नानी दमण में आयोजित किया जाएगा। रोजगार मेला में शामिल होने वाले उम्मीदवारों को जरूरी दिशानिर्देश जारी किये गये हैं। जिसके मुताबिक उम्मीदवार स्थल पर पंजीकरण करें तथा अपना अद्यतन रिज्यूम / सीवी और आवश्यक मूल दस्तावेज, जैसे शैक्षणिक प्रमाण-पत्र, चिकित्सा प्रमाण-पत्र, पहचान-पत्र आदि साथ लाएं। औपचारिक पोशाक में आएं और समय पर पहुंचें। संबंधित कंपनी के स्टॉल पर जाकर मौके पर ही साक्षात्कार दें। स्क्रीनिंग, साक्षात्कार एवं चयन उसी दिन होने के लिए तैयार रहें। चयनित उम्मीदवारों को मौके पर ही ऑफर / नियुक्ति पत्र प्रदान किया जा सकता है। प्रशासन सभी इच्छुक एवं पात्र युवाओं से अपील करता है कि वे अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर इस अवसर का लाभ उठाएं।

दमण मेमन जमात की आयोजित हुई जनरल मीटिंग

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण 25 अगस्त। दमण मेमन जमात की नई कमेटी के गठन को एक वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर गत रात्रि दमण के मांजरा पार्किंग हॉल में जमात की जनरल मीटिंग का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता जमात के अध्यक्ष हाजी शिराज शरीफ ने की। इस अवसर पर ऑल इंडिया मेमन जमात फेडरेशन के जोनल सेक्रेटरी माजीद लाधाणी विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। जमात के अध्यक्ष हाजी शिराज शरीफ द्वारा उपस्थित अतिथियों का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया गया। अपने स्वागत संबोधन में उन्होंने सभी उपस्थित सदस्यों का आभार व्यक्त करते हुए जमात के कार्यों में सभी के सहयोग की सराहना की। बैठक के दौरान दमण मेमन जमात के ट्रेजरर इमरान राजकोटिया ने पूरे वर्ष के आय-व्यय का विस्तृत लेखा-जोखा जनरल मीटिंग के समक्ष प्रस्तुत किया। वहीं जमात के उपाध्यक्ष हाजी फैसल कापड़िया ने आगामी वर्ष में आयोजित किए जाने वाले विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों एवं आयोजनों की विस्तृत जानकारी उपस्थित सदस्यों के समक्ष रखी। जनरल मीटिंग के दौरान समाज के हित एवं विकास को ध्यान में रखते हुए विभिन्न सामाजिक कार्यों पर चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किए गए। साथ ही समाज के भविष्य के विकास, एकता एवं कल्याण के लिए अनेक संकल्प भी लिए गए। कार्यक्रम के अंत में दमण मेमन जमात के जनरल सेक्रेटरी हाजी मंसूर चणा ने उपस्थित सभी लोगों का आभार व्यक्त किया।

राष्ट्रीय खेल दिवस पर खेलो इंडिया संवाद कार्यक्रम का 27 अगस्त को होगा आयोजन

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, सिलवासा 25 अगस्त। राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर मेरा युवा भारत (माय भारत) सिलवासा तथा राष्ट्रीय सेवा योजना के संयुक्त तत्वावधान में खेलो इंडिया संवाद कार्यक्रम का आयोजन 27 अगस्त 2026 को किया जाएगा। कार्यक्रम दादरा नगर हवेली की दो शैक्षणिक संस्थाओं डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम गवर्नमेंट कॉलेज तथा सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय टोकरखाड़ में आयोजित होगा। कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से देशभर के युवाओं से संवाद करेंगे। दादरा नगर हवेली के युवा भी बड़ी संख्या में कार्यक्रम से जुड़कर प्रधानमंत्री का संबोधन सुनेंगे तथा खेल और युवा विकास से जुड़े विभिन्न विषयों पर संवाद में भाग लेंगे। खेलो इंडिया संवाद का मुख्य उद्देश्य युवाओं को खेलों से जोड़ने के साथ-साथ स्थानीय खेल प्रतिभाओं और खिलाड़ियों के अनुभवों एवं संघर्षों से परिचित कराना है। कार्यक्रम में खिलाड़ियों के अनुभव खेल क्षेत्र में उपलब्ध अवसर, देश में विकसित हो रहे खेल इकोसिस्टम तथा खेलों के बुनियादी ढांचे के विकास जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की जाएगी। मेरा युवा भारत सिलवासा के जिला युवा अधिकारी विट्ठल चौरमेले ने बताया कि कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं को खेल, युवा नेतृत्व और राष्ट्र निर्माण से जोड़ना है। उन्होंने कहा कि भारत को खेल के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर अग्रणी बनाने तथा वर्ष 2036 के ओलंपिक के लिए खेल प्रतिभाओं को तैयार करने में युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है। साथ ही शासन एवं युवा नेतृत्व में युवाओं की भागीदारी बढ़ाने और विकसित भारत के निर्माण में उनकी सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करने पर भी जोर दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि युवा अपने विचार, सुझाव एवं आकांक्षाएं मेरा युवा भारत पोर्टल पर उपलब्ध सुझाव पेटी के माध्यम से ऑनलाइन साझा कर सकते हैं। युवाओं के सुझावों को कार्यक्रम की भावना से जोड़ते हुए उनकी भागीदारी को और प्रभावी बनाने का प्रयास किया जाएगा। कार्यक्रम के दौरान युवाओं को वीबीवायएलडी क्वीज प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाएगा। इसमें मेरा युवा भारत के स्वयंसेवक, एनएसएस स्वयंसेवक तथा स्थानीय युवा सक्रिय रूप से हिस्सा लेंगे।

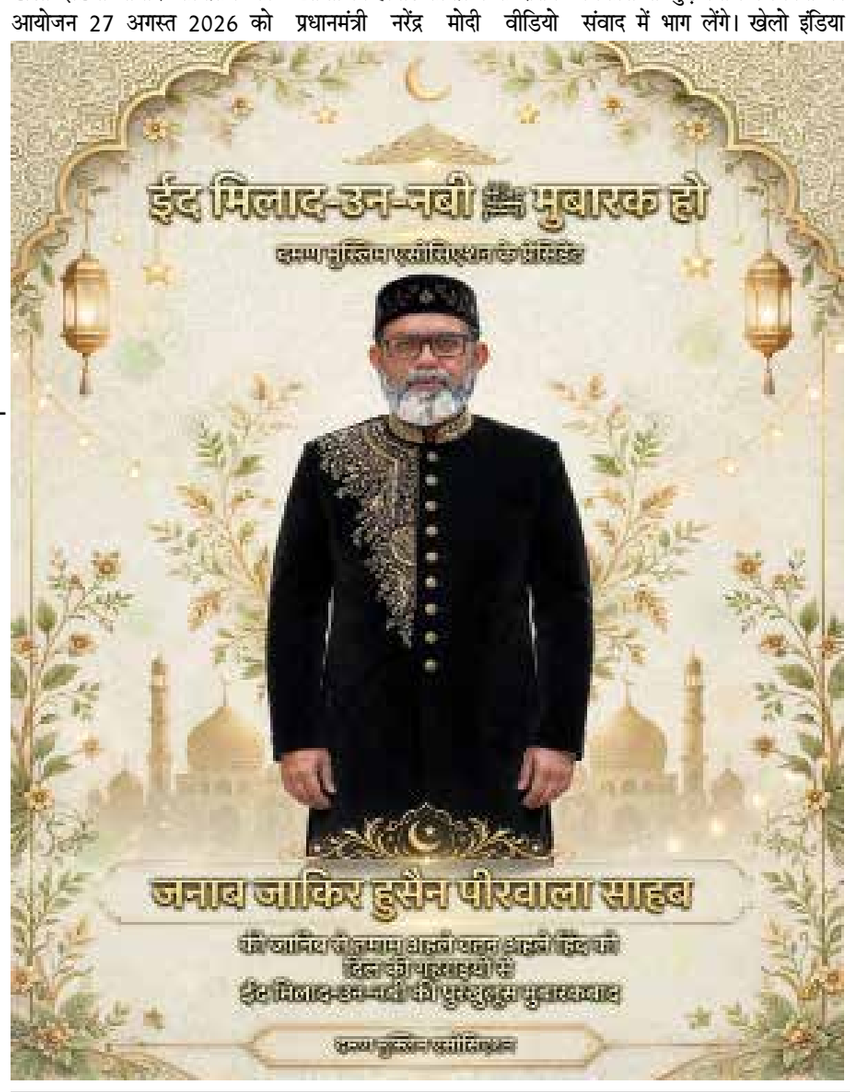

सिलवासा एसएसआर कॉलेज में रोड सेफ्टी जागरूकता और डिफेंसिव ड्राइव कार्यक्रम का हुआ आयोजन

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, सिलवासा 25 अगस्त। दादरा नगर हवेली के एसएसआर कॉलेज में रोड सेफ्टी अवेयरनेस और डिफेंसिव ड्राइविंग कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से उपस्थित फैकल्टी एवं कोच (सेफ्टी स्टीवर्ड) तथा रोड सेफ्टी अवेयरनेस के प्रमुख ट्रेनर परेश गज्जर ने विद्यार्थियों को सडक सुरक्षा पर मार्गदर्शन दिया। एसएसआर इंस्टीट्यूट स्टूडेंट्स के फायदे के लिए हर साल ऐसे एजुकेशनल और सेफ्टी से जुड़े कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। इस कार्यक्रम का को-ऑर्डिनेशन डॉ. राजेश पांडे ने किया। कार्यक्रम का आयोजन इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर प्रो. (डॉ.) राकेश पाटिल की देखरेख में हुआ। इस जागरूकता कार्यक्रम में 52 छात्रों और 8 स्टाफ सदस्यों ने हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम के आयोजन का मुख्य उद्देश्य एसएसआर कॉलेज के छात्रों को रोड सेफ्टी के प्रति जागरूक करना था और सुरक्षित ड्राइविंग के लिए मार्गदर्शन देना था।

सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय दीव में वित्तीय साक्षरता जागरूकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दीव 25 अगस्त। विद्यार्थियों में वित्तीय जागरूकता बढ़ाने तथा उन्हें सुरक्षित बैंकिंग, डिजिटल लेन-देन और वित्तीय धोखाधड़ी से बचाव के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय दीव में एक विशेष वित्तीय साक्षरता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में एसबीआई के लीड डिस्ट्रिक्ट बैंक मैनेजर कृष्ण मोहन तथा वित्तीय साक्षरता काउंसलर भगवान मेर विशेष रूप से उपस्थित रहे। विद्यालय के आचार्य विजयकुमार जे. बामणिया ने अतिथियों का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया। कार्यक्रम के दौरान कृष्ण मोहन एवं भगवान मेर ने विद्यार्थियों को वित्तीय साक्षरता, बैंकिंग सेवाओं, बचत की आदत, डिजिटल बैंकिंग, ऑनलाइन लेन-देन में सावधानी तथा विभिन्न प्रकार के वित्तीय फ्रॉड के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की। उन्होंने विद्यार्थियों को विशेष रूप से ओटीपी, एटीएम पिन, यूपीआई पिन, पासवर्ड तथा बैंक संबंधी गोपनीय जानकारी किसी के साथ साझा न करने, संदिग्ध लिंक पर क्लिक न करने और अनजान व्यक्तियों के साथ बैंकिंग संबंधी जानकारी साझा करने से बचने के लिए जागरूक किया।
साथ ही किसी भी संदिग्ध वित्तीय गतिविधि या धोखाधड़ी की स्थिति में तुरंत संबंधित बैंक एवं सक्षम प्राधिकरण को सूचित करने की सलाह दी गई। कार्यक्रम विद्यार्थियों के लिए अत्यंत ज्ञानवर्धक, उपयोगी एवं जागरूकतापूर्ण रहा। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने वित्तीय मामलों से संबंधित विभिन्न प्रश्न पूछे, जिनका अतिथियों द्वारा सरल एवं व्यावहारिक तरीके से समाधान किया गया। विद्यालय के आचार्य विजयकुमार जे. बामणिया ने अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वर्तमान डिजिटल युग में विद्यार्थियों के लिए वित्तीय रूप से जागरूक एवं सतर्क होना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने इस प्रकार के जागरूकता कार्यक्रमों को विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए महत्वपूर्ण बताया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में विद्यालय के शिक्षकगण एवं विद्यार्थियों का सराहनीय सहयोग रहा।

दीव में मनाया गया साईं बाबा मंदिर का भव्य पाटोत्सव: हवन, पूजा और महाप्रसाद का भी आयोजन

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दीव, 25 अगस्त। दीव के झापाबार स्थित साईं बाबा मंदिर का आज 18 साल पूरा हो गया और 19वें साल में प्रवेश पर भव्य पाटोत्सव का आयोजन किया गया।
मंदिर परिसर में सुबह से ही धार्मिक कार्यक्रमों का शुभारंभ हो गया। जिसमें साईं बाबा की यज्ञ, पूजा और जलाभिषेक किया गया। सुबह गायत्री परिवार द्वारा भव्य कलश यात्रा निकाली गई। जो गायत्री मंदिर से मुख्य मार्ग होते हुए साईं बाबा मंदिर पहुंची। जहाँ मंदिर परिसर में हवन का आयोजन हुआ। शास्त्री विक्रम पंड्या ने मंत्रोच्चार के साथ हवन की पूजा और आरती आदि संपन्न कराई। यजमानों ने यज्ञ पूरा किया, जिसके बाद साईं बाबा को भोग और आरती अर्पित की गई और फिर भक्तों ने महाप्रसाद का लाभ उठाया। इस पूरे धार्मिक कार्यक्रम में बड़ी संख्या में भक्त शामिल हुए और साईं बाबा के दर्शन भी किए।

स्वामी: मारुतिनंदन पब्लिक, संपादक, प्रकाशक व मुद्रक विजय जगदीशचंद्र भट्ट द्वारा गाला नं. 7, तिरुपति इंडस्ट्रीयल एस्टेट, सोमनाथ मंदिर रोड, दाभेल, नानी दमण - 396210 से प्रकाशित तथा असली आजादी प्रेस गाला नं. 7, तिरुपति इंडस्ट्रीयल एस्टेट, सोमनाथ मंदिर रोड, दाभेल नानी दमण - 396210 से मुद्रित।
(समाचारों के चयन के लिए संपूर्ण जिम्मेदारी पीआरबी एक्ट के अंतर्गत संपादक की होगी। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र दमण न्यायालय के अधीन होगा।)